बी० ए० (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड

मनोविज्ञान–षष्ठ पत्र

विषय-सूची

क्रम सं०		पाठ	पृष्ठ
	ग्रुप—A		
1.	संरचनावाद एवं प्रकार्यवाद (Structuralism and Fuctionalims)	1	2
2.	व्यवहारवाद (Behaviourism)	2	21
3.	गेस्टाल्टवाद (Gestalt School)	3	42
4.	मनोविश्लेषण (Psychoanalysis)	4	57
5.	नवफ्रायडवाद (Neo Freudians)	5	74
6.	मानवतावादी मनोविज्ञान (Humanistic Psychology)	6	87
	ग्रुप—B		
7.	शिक्षा मनोविज्ञान की विषय वस्तु, महत्त्व एवं विधियाँ (Educational Psychology : Subject matter, Importance and Methods)	7	99
8.	बुद्धि अभिक्षमता एवं उपलब्धि का मापन (Measurement of Intelligence, Aptitude and Achievement)	8	116
9.	शिक्षण (Learning)	9	134
10.	परीक्षा (Examination)	10	150
11.	विशिष्ट या असाधारण बालकों की शिक्षा एवं उनका अभियोजन (Education and adjustment of special type of children)	11	167
12.	शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श (Educational Guidance and Couselling)	12	184

ग्रुप—A

इकाई-1

संरचनावाद एवं प्रकार्यवाद
Structuralism and Functionalism

पाठ-संरचना

1.0 उद्देश्य
1.1 विलहेम वुण्ट का योगदान
1.2 ई०वी० टिचेनर का संरचनात्मक मनोविज्ञान
1.3 संरचनावाद की आलोचना
1.4 वुण्ट एवं टिचेनर का तुलनात्मक अध्ययन
1.5 प्रकार्यवाद से एक परिचय
1.6 एक सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद
1.7 प्रकार्यवाद की आलोचनाएँ
1.8 संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद में अन्तर
1.9 सारांश
1.10 पाठ में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्द
1.11 अभ्यास के लिए प्रश्न
1.11.1 लघु उत्तरीय प्रश्न
1.11.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
1.12 प्रस्तावित पाठ

1.0 उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ के कई मुख्य उद्देश्य हैं। इसका पहला उद्देश्य पाठक को यह बतलाना है कि संरचनावाद किसे कहते हैं। इनके संस्थापक के रूप में वुण्ट एवं टिचेनर का क्या योगदान है ? उनके योगदानों का एक तुलनात्मक अध्ययन करना भी पाठ का एक मुख्य उद्देश्य है। पाठ का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य पाठक को यह बतलाना है कि प्रकार्यवाद किसे कहते हैं, उसके कौन-कौन से संस्थापक हैं ? एक सम्प्रदाय के रूप में इसका क्या महत्व है ? यह किस प्रकार संरचनावाद से भिन्न है इत्यादि। अन्य पाठ की भाँति यहाँ भी पाठ का सारांश, पाठ में प्रयुक्त शब्द कुंजी, अभ्यास के लिए मुख्य प्रश्न, पाठ के लिए अन्य उपयोगी सामग्री को शामिल किया गया है। हम आशा करते हैं कि पाठक पाठ से लाभान्वित होंगे।

1.1 विलहेम वुण्ट के योगदान (Contributions of Wundt)

वुण्ट को मनोविज्ञान के नवीन प्रयोगात्मक विज्ञान का संस्थापक होने के साथ-साथ संरचनात्मक मनोविज्ञान का अग्रगामी माना जाता है। अमरीका में यह कहने की प्रथा हो गयी है कि वुण्ट संरचनात्मक विज्ञान

के अग्रगामी थे और टिचेनर ने उसका विधिवत् विकास किया था। वस्तुतः वुण्ट ने संरचनात्मक मनोविज्ञान के समूचे क्षेत्र की योजना बनाई थी, किन्तु वे उसे केवल मनोविज्ञान ही समझते थे, टिचनर के लिए 1898 में संरचनात्मक मनोविज्ञान के नाम का आविष्कार करना शेष रह गया था।

संरचनावाद क्या है और यह मनोविज्ञान में प्रथम व्यवस्थित अवस्था के रूप में क्यों विकसित हुआ ? नवीन मनोविज्ञान की विषय-वस्तु चेतन अनुभव तथा कार्य, चेतन की संरचना का प्रयोगात्मक अन्वेषण, समय की प्रचलित रीति द्वारा निर्धारित हुए थे। प्रयोगात्मक विधियों तथा पुराने प्राकृतिक विज्ञानों के आधारभूत उपागम को नवीन मनोविज्ञान ने आत्मसात् किया। उसने अन्वेषण की वैज्ञानिक विधियों का रूपान्तरण किया और अपनी विषय-वस्तु को उसी प्रकार अध्ययन किया, जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञान अपनी विषय-वस्तु का अध्ययन कर रहा था। जिस प्रकार भौतिक जगत को कई एक तत्वों में विश्लेषण करके समझा जा सकता है उसी प्रकार चेतन अनुभव के जगत की व्याख्या की जा सकती है। इस प्रकार समय ने विषय वस्तु तथा नवीन मनोविज्ञान की अन्वेषण की विधियों को रूप देने में सहायता की।

प्राचीन संरचनावादियों का कार्य प्राथमिक चेतन अनुभवी के स्वरूप को पता लगाना था। तात्पर्य यह कि वे चेतना को अलग-अलग भागों में विश्लेषित करना चाहते थे। इस प्रकार चेतना की संरचना की खोज करने के लिए वुण्ट तथा अन्य मनोवैज्ञानिकों के लिए मंच तैयार कर दिया था। हम यह देखेंगे कि वे इस कार्य में किस प्रकार सफल हुए और इस प्रारम्भिक व्यवस्थित अवस्था ने मनोविज्ञान के उत्तरकालीन विकास को किस प्रकार प्रभावित किया।

वुण्ट ने तात्कालिक अनुभव को मनोविज्ञान की विषय वस्तु बताया। यह अनुभव मध्यवर्त्ती अनुभव से भिन्न होता है। मध्यवर्त्ती अनुभवी एवं अनुभव के अतिरिक्त किसी वस्तु के ज्ञान के साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह साधारण रूप है जिसमें हम अनुभवात्मक जगत के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने के अनुभव का उपयोग करते हैं। हम फूल को देखकर कहते हैं कि लाल है। इसका अर्थ होता है कि हमारी पुष्प रुचि फूल में है, इस बात में नहीं कि हम लाल का अनुभव कर रहे हैं। वुण्ट के अनुरूप, फूल को देखने में तात्कालिक अनुभव स्वयं वस्तु में नहीं है, अपितु लाल के अनुभव में है। इस प्रकार वुंट के लिए तात्कालिक अनुभव स्वत: अनुभव है, जो उच्चतर स्तर की व्याख्याओं से मुक्त तथा पक्षपात रहित होता है, जो फूल के रूप में लाल के इस अनुभव का वर्णन करना है। वुण्ट के लिए आधारभूत अनुभव जैसे लाल मन के तत्व अथवा चेतना की आधारभूत अवस्थाएँ होती हैं। वुण्ट मन अथवा चेतना का उसके अधिकतम प्राथमिक घटकों मे विश्लेषण अथवा विघटन ठीक उसी प्रकार करना चाहते थे, जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञानी अपनी विषय-वस्तु भौतिक जगत का विघटन कर रहे थे। जब हमारे दाँत में दर्द होता है और हम जिस भावना का अनुभव करते हैं, उसका ध्यानपूर्वक विवरण देते हैं। तब हमारा सम्बन्ध तात्कालिक अनुभव से होता है। किन्तु जब हम यह कहते हैं कि हमारे दाँत में दर्द होता है, तब हमारा सम्बन्ध मध्यवर्त्ती अनुभव से होता है। वुण्ट चेतन अनुभवों को विभिन्न प्रकार के प्राथमिक घटकों के रूप में वर्णन करना चाहते थे।

वुण्ट के लिए मनोविज्ञान अनुभव का विज्ञान था, इस कारण उनके अनुसार उसकी विधि प्रयोगात्मक विधि होनी चाहिए। स्पष्ट शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि वुंट अनुभव का अध्ययन स्व-अवलोकन अथवा अन्तर्दर्शन द्वारा करना चाहते थे। उनकी अभिलाषा थी कि अन्तर्दर्शन की दशाओं पर परिशुद्ध प्रायोगिक नियंत्रण को लागू किया जाना चाहिए। यह बात ध्यान देने योग्य है कि मनोविज्ञान में अन्तर्दर्शन की विधि को भौतिकी तथा शरीर-क्रिया विज्ञान से लिया गया है, दर्शन से नहीं। भौतिकी में अन्तर्दर्शन का उपयोग प्रकाश तथा ध्वनि का अध्ययन करने में किया जाता था और शरीर क्रिया विज्ञान में इन्द्रियों का अध्ययन करने के लिए।

इस प्रकार वुण्ट ने मनोविज्ञान की विषय-वस्तु तथा विधि को परिभाषित किया। इसके बाद उन्होंने मनोविज्ञान के तीन लक्ष्य बताए : (1) चेतन प्रक्रियाओं को उनके आधारभूत तत्वों में विश्लेषित करना, (2) यह खोज करना कि ये तत्व किस प्रकार सम्बद्ध हैं; तथा (3) उनके सम्बन्ध में नियमों का निर्धारित करना।

वुण्ट ने अनुभव के तत्वों की व्याख्या की। उनके अनुसार संवेदनाएँ अनुभव का प्राथमिक रूप हैं और वे तब जागृत होती हैं जब संवेदांग उद्दीप्त किया जाता है और परिणामी आवेग मस्तिष्क में पहुँचता है। उन्होंने संवेदनाओं का निश्चय मात्रा तथा अवधि के आधार पर वर्गीकरण किया। वुण्ट संवेदनाओं तथा प्रतिमाओं में कोई मूलभूत अन्तर नहीं मानते थे, क्योंकि प्रतिमाओं का सम्बन्ध भी बल्कुटीय उत्तेजन से होता है। वुण्ट का दृष्टिकोण शरीर-क्रियात्मक था, इस कारण वे प्रमस्तिष्क वल्कुट के उत्तेजन तथा अनुरूप संवेदी अनुभव में एकैक अनुरूपता मानते थे। वे मन तथा शरीर पर निर्भर नहीं थे, किन्तु परस्पर क्रिया करने वाले तंत्र नहीं। फलत: मन शरीर पर निर्भर नहीं था और उसका अपने आप में प्रभावी रूप से अध्ययन नहीं किया जा सकता था।

संवेदनाओं के अतिरिक्त भावनाएँ अनुभव का दूसरा रूप मानी गई थीं। वुण्ट के विचार में संवेदनाएँ तथा भावनाएँ तात्कालिक अनुभव के युगवत् पक्ष थे। भावनाएँ संवेदनाएँ की क्रिया आत्मपरक पूरक होतीं हैं, किन्तु वे सीधी किसी इन्द्रिय से उत्पन्न नहीं होती। संवेदनाओं के साथ कुछ भावना गुण होते हैं, और जब संवेदनाएँ कुछ भावना गुण होती हैं और जब संवेदनाएँ कुछ अधिक जटिल अवस्था का रूप धारण कर लेती है, तब संवेदनाओं के इस सम्मिश्रण से भावना गुण उत्पन्न होता है।

वुण्ट ने अपने अन्तर्दशन अवलोकन के आधार पर भावना का त्रिविमीय सिद्धान्त विकसित किया, जो विवाद का विषय बन गया। भावना की तीन स्पष्ट तथा स्वतंत्र विमाएँ हैं : (1) सुख-दु:ख, (2) खिंचाव-विश्रान्ति तथा (3) उत्तेजना प्रशान्त। उन्होंने बताया कि प्रत्येक भावना इस त्रिविमीय स्थान में रखी जा सकती हैं।

वुण्ट का कहना था कि संवेग इन प्राथमिक भावनाओं के जटिल संमिश्रण होते हैं। वुण्ट ने संवेगों को मन की चेतन अन्तर्वस्तु माना। उनके भावना के सिद्धान्त ने उनकी निजी प्रयोगशाला में तथा अन्य प्रयोगशाला में अनुसंधान को प्रोत्साहित किया।

1.2 टिचेनर का संरचनात्मक मनोविज्ञान (Structuralism of Titchener)

1898 में टिचेनर में एक शोध-पत्र प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था, "दी पौसचूलेट्स ऑफ स्ट्रक्चरल साइकोलॉजी"। इस शोध पत्र के साथ संरचनावाद की औपचारिक संस्थापना होते मानी गयी। इस संरचनात्मक मनोविज्ञान की मुख्य विशेषताएँ निम्नांकित हैं--

1.2.1 मनोविज्ञान की विषय वस्तु

टिचेनर ने यह स्पष्ट किया कि सभी विज्ञान का आरम्भ बिन्दु अनुभूति ही होती है। वे वुण्ट के इस विचार से सहमत नहीं थे कि मनोविज्ञान तात्कालिक अनुभूति का अध्ययन करता है तथा भौतिकी मध्यवर्त्ती अनुभूति का। वास्तव में, वे अनुभूति के इस विभाजन से सहमत नहीं थे। टिचेनर के लिए सभी अनुभूतियाँ तात्कालिक थीं। मनोविज्ञान तथा भौतिकी में अन्तर इसलिए नहीं था कि उनका संबंध अलग-अलग विषय से था बल्कि इसलिए था कि वे अपनी उभयनिष्ठ विषय-वस्तु को भिन्न दृष्टिकोण से अध्ययन करते थे। मनोविज्ञान अनुभूति का अध्ययन उस व्यक्ति के संदर्भ में करता है जो उस अनुभूति का अनुभव करता है जबकि भौतिक अनुभूति का अध्ययन बिना किसी व्यक्ति के संदर्भ में करता है। दूसरे शब्दों में, भौतिक विज्ञानी अनुभूति का अध्ययन व्यक्ति से स्वतंत्र होकर करते हैं जबकि मनोविज्ञानी अनुभूति का अध्ययन व्यक्ति पर आधारित होकर करता है। यही कारण है कि मनोविज्ञान की विषयवस्तु की औपचारिक परिभाषा देते हुए टिचेनर ने कहा है कि "अनुभव करने वाले व्यक्ति पर आधारित अनुभूति" ही मनोविज्ञान की विषयवस्तु है।

टिचेनर ने मन तथा चेतन के बीच भी अन्तर किया। उनके अनुसार जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति की अनुभूतियों के कुछ योग को मन कहा गया है जबकि किसी दिए हुए समय में व्यक्ति की अनुभूतियों के कुछ योग का चेतन कहा जाता है।

टिचेनर के अनुसार मनोविज्ञान के तीन समस्याएँ हैं। क्या, कैसे ? तथा क्यों ? ''क्या'' से तात्पर्य मानसिक अनुभूति का उनके सरलतम तत्वों में विश्लेषण से था। "कैसे" से तात्पर्य यह खोज करना था कि मानसिक अनुभूति के तत्व किस तरह से संयोजित होते हैं तथा वे कौन-कौन से नियम हैं जिनसे संयोजन निर्धारित होता है। "क्यों" से तात्पर्य उन तरीकों से होता है जिसके सहारे मानसिक घटनाएँ अपनी दैहिक अवस्थाओं अर्थात् मस्तिष्क एवं तंत्रिका तंत्र से सहसंबंधित होती हैं।

वुण्ट के ही समान टिचेनर ने भी चेतन के तत्वों का विश्लेषण किया। टिचेनर के अनुसार चेतन के तीन मूल तत्व होते हैं—संवेदन, प्रतिमा तथा भाव या मनोभाव। वुण्ट प्रतिमा को चेतन का स्वतंत्र तत्व नहीं माने थे। टिचेनर ने संवेदन को प्रत्यक्षण का एक तत्व माना है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "आउटलाइन ऑफ साइकोलॉजी" में टिचेनर ने संवेदन के 42, 415 प्रकारों का वर्णन किया है। प्रतिमा विचार के तत्व होते हैं, और उनके द्वारा उन पैटर्न का प्रतिनिधित्व होता है जो वास्तव में उपस्थित नहीं होते हैं। टिचेनर ने वुण्ट के "त्रिविमीय सिद्धांत" को अस्वीकृत कर दिया। वुण्ट द्वारा इस सिद्धान्त के तहत प्रतिपादित तीन आयामों अर्थात् सुख-दुख, तनाव-शिथिल, उत्तेजन-शांत में टिचेनर ने मात्र पहले आयाम को ही स्वीकृत किया और अन्य दो आयामों को संवदेन एवं प्रतिमा के भीतर ही सम्मिलित कर लिया। हेनले (1974) के अनुसार बाद में टिचेनर भाव के सुख-दुख आयाम को भी अस्वीकृत कर दिया क्योंकि टिचेनर के अनुसार भाव का कोई स्वतंत्र गुण नहीं होता है। अपने जीवन के अन्तिम कुछ वर्षों में उन्होंने अपने संप्रदाय को और सरल बनाते हुए कहा कि संवेदन तथा प्रतिमा के बीच कोई अन्तर नहीं है तथा अन्त में उन्होंने संवेदनों को ही अधिक प्रबल माना।

टिचेनर ने यह भी सपष्ट किया कि चेतन के तत्वों को अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। वुण्ट ने ऐसी दो विशेषताओं को महत्त्वपूर्ण बतलाया था। वे दो विशेषताएँ हैं—गुण तथा तीव्रता। टीचेनर ने इन विशेषताओं की सूची में दो और विशेषताओं को अर्थात् स्पष्टता तथा अवधि को जोड़ा। कभी-कभी इसके अलावा संवेदन की एक और विशेषता अर्थात् विस्तार भी देखने को मिलता है। टिचेनर ने यह भी स्पष्ट किया है कि संवेदन तथा प्रतिमा में ये सभी चारों विशेषताएँ होती हैं। परन्तु भाव में स्पष्टता की विशेषता को छोड़कर बाकी अन्य तीन विशेषताएँ होती हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि संवेदन तथा प्रतिमा में अन्तर करना सामान्यतः संभव नहीं है। लेकिन तीव्रता की विशेषता के रूप में एक परिणामात्मक अन्तर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि तीव्रता के आयाम पर एक ऐसे बिन्दु का निर्धारण किया जा सकता है कि प्रतिमा इतनी अधिक मजबूत हो जाती है जिसे संवेदन कहा जाता है या जहाँ संवेदन इतना कमजोर हो जाता है कि उसे प्रतिमा कहा जा सकता है। टिचेनर ने उर्जवर्ग स्कूल के प्रतिमारहित चिन्तन के संप्रत्यय को अस्वीकृत कर दिया और यह दावे के साथ कहा कि उर्जवर्ग मनोवैज्ञानिकों द्वारा उस तरह के परिणाम इसलिए पाये गये थे क्योंकि उनके प्रयोज्यों के अन्तर्निरीक्षण अधूरे एवं दोषपूर्ण थे।

इस तरह से यह स्पष्ट हुआ कि टिचेनर चेतन की सम्पूर्ण संरचना को उनके तत्वों तथा मुख्य विशेषताओं के रूप में उन्हें काफी स्पष्ट किया। इस तरह से वे मनोविज्ञान के प्रथम मुख्य प्रश्न अर्थात् क्या का उत्तर दे सकने में समर्थ हुए।

1.2.2 मनोविज्ञान की विधियाँ

वुण्ट के समान टिचेनर भी अन्तर्निरीक्षण (Introspection) को मनोविज्ञान की मुख्य विधि माना, टिचेनर के लिए अन्तर्निरीक्षण विधि वुण्ट की तुलना में अधिक औपचारिक विधि है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि अंत:निरीक्षण की विधि उत्तम ढंग से प्रशिक्षित प्रेक्षकों द्वारा ही वैज्ञानिक ढंग से सम्पन्न की जा सकती है। टिचेनर ने अन्तर्निरीक्षण को प्रभावी बनाने के लिए कई महत्त्वपूर्ण नियमों का भी प्रतिपादन किया जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं—

(1) प्रेक्षक को पूर्णत: निष्पक्ष एवं अपूर्वाग्रही होना चाहिए।

(2) प्रेक्षक को अपने ध्यान पर पूर्णत: नियंत्रण होना चाहिए तथा वह उसके इधर-उधर भटकने पर रोक लगाने में सक्षम हो।

(3) प्रेक्षक का मन तथा शरीर थकान द्वारा प्रभावित नहीं हो। दूसरे शब्दों में, उनमें ताजापन हो।

(4) प्रेक्षक को अन्तर्निरीक्षण के प्रति एक धनात्मक मनोवृत्ति होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, उसे इस प्रक्रिया में अभिरुचि होनी चाहिए।

1.2.3 चयन के नियम

टिचेनर ने इस समस्या पर भी ध्यान देने की कोशिश की है कि व्यक्ति क्यों कुछ उद्दीपनों का चेतन में चयन कर लेता है ? उन्होंने इस समस्या का समाधान ध्यान के संप्रत्यय द्वारा किया है। उनका मत है कि ध्यान मे सभी चेतन तत्व इस तरह से सुव्यवस्थित हो जाते हैं कि वे चेतन के केन्द्र बन जाते हैं। इस तरह से ध्यान के संप्रत्यय को टिचेनर ने संवेदी स्पष्टता के तुल्य माना है। उन्होंने ध्यान की तीन सामान्य अवस्थाओं का वर्णन किया है—अनैच्छिक या प्राथमिक ध्यान, ऐच्छिक या द्वितीयक ध्यान तथा व्युत्पन्न या अभ्यासगत अनैच्छिक ध्यान। अनैच्छिक या प्राथमिक ध्यान में संवेदी अनुभूति की कुछ विशेषताएँ जैसे-गुण तथा तीव्रता के आधार पर व्यक्ति किसी वस्तु या घटना की ओर ध्यान देता पाया जाता है। अचानक आवाज होने या रोशनी की तीव्र चमक होने पर व्यक्ति का ध्यान उसकी बिना इच्छा के ही चला जाता है। यह अनैच्छिक ध्यान का उदाहरण है। ऐच्छिक या द्वितीयक ध्यान से तात्पर्य चेतन तत्वों पर किसी निश्चित उद्देश्य के साथ ध्यान केन्द्रित करने से होता है। इसे टिचेनर ने एक कठिन अवस्था बतलाया है क्योंकि इसमें व्यक्ति को स्पष्टता के उच्चतर स्तर पर ध्यान को केन्द्रित करके रखना पड़ता है। व्युत्पन्न या अभ्यासगत अनैच्छिक ध्यान में व्यक्ति समान परिस्थिति के दोहराये जाने के कारण ध्यान देता है।

1.2.4 संबंध के नियम

यद्यपि यह सही है कि टिचेनर ने साहचर्य या संबंध के नियम को संरचनावाद में अधिक महत्व नहीं दिये हैं, फिर भी उन्होंने सामीप्यता के नियम को संवेदनों एवं प्रतिमाओं के साहचर्य के लिए महत्वपूर्ण माना है। टिचेनर के भाव को अनुभूति का स्वतंत्र तत्व के रूप में नहीं माना। उन्होंने यह स्पष्टत: कहा कि जब भी चेतन अनुभूति में संवेदी या प्रतिमारूपी तत्व उत्पन्न होते हैं, तो साथ-ही-साथ वे सभी संवेदी प्रतिमारूपी तत्व भी उपस्थित हो जाते हैं जो उस संवेदी या प्रतिमारूपी तत्व के सामीप्य रह चुके हैं। इस तरह से टिचेनर के लिए सामीप्यता का नियम साहचर्य का एक मौलिक नियम है। टिचेनर ने यह भी स्पष्ट किया कि चेतन के जो भिन्न-भिन्न तत्व होते हैं वे आपस में अशंछादित रहते हैं तथा एक-दूसरे को परिवर्त्तित भी करते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि उनके संश्लेषण में कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। इस तरह टिचेनर वुण्ट के समान एक स्थैतिक तत्ववादी नहीं थे। वुण्ट के अनुसार चेतन अनुभूति के तत्व स्थैतिक होते हैं, और भौतिक वस्तुओं का गुण उनमें पाया जाता है। परन्तु टिचेनर उसे नहीं मानते थे और संश्लेषण के नियम को काफी महत्व दिया।

1.2.5 संवेग

टिचेनर के लिए संवेग से तात्पर्य शरीर के भीतर संवेदन के उत्पन्न होने वाले तीव्र भावों से होता है। इसलिए चेतन अनुभूति का भाव ही संवेग का महत्वपूर्ण सारभाग होता है। टिचेनर ने संवेग के अध्ययन के लिए दो विधियों का प्रतिपादन किया है—प्रभाव की विधि तथा अभिव्यक्ति की विधि। जब हमलोग विभिन्न भावात्मक गुणों या विशेषताओं की तुलना करना चाहते हैं तो प्रभाव की विधि का उपयोग करते हैं। जैसे, विभिन्न रंगों

की भावात्मक विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए तुलना करने के ख्याल से उसे सुखद से दुःखद के क्रम में सुव्यवस्थित कर सकते हैं। अभिव्यक्ति विधि में शारीरिक परिधानों जैसे–सांस लेना, रक्तचाप, हृदय गति आदि के आधार पर संवेग का अध्ययन किया जाता है। जब टिचेनर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "टेक्स्टबुक ऑफ साइकोलॉजी" 1910 में प्रकाशित किया तो उसी समय मनोगैल्वनी त्वक अनुक्रिया का मापन भी प्रारंभ किया गया था।

1.2.6 चिन्तन

टिचेनर द्वारा चिन्तन के क्षेत्र में जो कार्य किये गए हैं, वे मूलतः उर्जवर्ग स्कूल द्वारा चिन्तन पर किये गये कार्यों की आलोचना के रूप में है। उर्जवर्ग स्कूल ने अपने शोधों के आधार पर यह स्पष्ट किया था कि चिन्तन में प्रतिमा नहीं होती हैं। अतः चिन्तन प्रतिमारहित होता है। टिचेनर ने इसका विरोध किया और कहा कि चिन्तन में संवेदी एवं प्रतिमाओं जैसे तत्व पाये जाते हैं। टिचेनर के प्रयोज्यों ने अपनी चिन्तन प्रक्रिया में प्रतिमारहित अंतर्वस्तु की संपुष्टि नहीं की। टिचेनर का मत था कि उर्जवर्ग स्कूल द्वारा उस तरह का परिणाम इसलिए पाया गया था क्योंकि उनके प्रयोज्यों द्वारा किये गये अन्तर्निरीक्षण दोषपूर्ण थे। उनका मत था कि चिन्तन में गति संवेदनों एवं प्रतिमाओं का अविश्लेषित मिश्रण पाया जाता है। टिचेनर ने इच्छा तत्व को भी अस्वीकृत कर दिया जिसे वुण्ट ने काफी महत्व दिया था। उन्होंने कहा कि इच्छा प्रतिमाओं के मिश्रण का परिणाम होती है जिसके सहारे क्रिया होने के पहले ही विचारों का महत्व हो जाता है। फिर भी टिचेनर ने उर्जवर्ग मनोवैज्ञानिकों के कुछ विचारों को स्वीकार किये हैं। जैसे, टिचेनर ने ऐक की "निर्धारक प्रवृत्ति" को स्वीकार किया है तथा उर्जवर्ग स्कूल का यह विचार भी उन्हें मान्य था कि चिन्तन का स्वरूप अचेतन होता है।

1.2.7 मन-शरीर समस्या

मन–शरीर सम्स्या के संबंध में टिचेनर ने वुण्ट के मनोभौतिकी समानान्तरवाद को स्वीकार किया। वुण्ट के समान ही उनका मत था कि मन या मानसिक क्रियाएँ, शरीर या शारीरिक क्रियाओं से भिन्न होती हैं। इन दोनों के बीच किसी प्रकार की कोई अन्तःक्रिया नहीं होती है तथा इनमें से कोई किसी को प्रभावित नहीं करता है। लेकिन किसी एक में परिवर्त्तन होने पर दूसरे में परवित्तन होता है। इस प्रकार से इतिहासकारों ने टिचेनर को वुण्ट के ही समान एक मनोभौतिकी समानान्तरवादी माना है। इस मनोभौतिकी समानान्तरवादी विचारधारा के आधार पर टिचेनर मनोविज्ञान के क्यों प्रश्न का उत्तर दे सकने में समर्थ हुए।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि टिचेनर का संरचनावाद वुण्ट की तुलना में अधिक स्पष्ट एवं सुस्पष्ट रूप से परिभाषित था। यह लगभग प्रत्येक दृष्टिकोण से आत्मपूरित था। इस संरचनावाद की मुख्य विशेषता यह थी कि यह मनोविज्ञान के क्या, कैसे, तथा क्यों पहलुओं पर विशेष रूप से बल डालता है। आधुनिक मनोविज्ञान पर उसका सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव था कि इसने मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगात्मक उत्साह को बढ़ावा दिया।

1.3 संरचनावाद की आलोचनाएँ (Criticisms of Structuralism)

यद्यपि संरचनावाद का धनात्मक एवं सक्रिय योगदान मनोविज्ञान के क्षेत्र में रहा है खासकर मनोविज्ञान के सदस्य को प्रयोगात्मक बनाने में इसकी भूमिका अहम् रही है, फिर भी आलोचकों ने इस स्कूल को एक रूढ़िवादी स्कूल कहकर इसकी तीव्र आलोचना की है। इसकी प्रमुख आलोचनाओं में कुछ निम्नांकित प्रमुख हैं–

1. आलोचकों का मत है कि एक सम्प्रदाय के रूप में टिचेनर का संरचनावाद काफी संकीर्ण रहा तथा यह चेतन अनुभूति के विश्लेषणात्मक ढाँचा तक सीमित था। चेतन अनुभूति की उपयोगिता का कार्य क्या है ? जैसे प्रश्न पर टिचेनर ने कभी नहीं सोचा और यह कहकर उसे टाल दिया कि इस प्रश्न का मनोविज्ञान से कोई ताल्लुक नहीं है। आलोचकों का मत है कि टिचेनर की मनोविज्ञान के व्यावहारिक पहलू में कोई अभिरुचि नहीं थी जो उनकी एक भूल थी। उस समय मनोविज्ञान की प्रयुक्त शाखाएँ उभर रही थी जिनके प्रति टिचेनर की उदासीनता को अलोचकों द्वारा काफी गंभीरता से लिया गया। शायद यही कारण है कि टिचेनर ने बाल मनोविज्ञान पशु मनोविज्ञान, समाज मनोविज्ञान, असामान्य मनोविज्ञान तथा औद्योगिक मनोविज्ञान जैसी शाखाओं के अध्ययन के मुख्य स्रोत से अपने आप को अलग रखा। जब वाटसन ने इन शाखाओं के अध्ययन पर बल डाला तो टिचेनर ने यह कहकर उनकी उपेक्षा कर दी कि वे सभी मनोविज्ञान नहीं हैं।

2. टिचेनर के संरचनावाद की दूसरी प्रमुख आलोचना अन्तर्निरीक्षण विधि से संबंधित है। आलोचकों का मत है कि यह विधि कई बिन्दुओं पर अपर्याप्त थी। ऐसी बिन्दुएँ निम्नांकित हैं–

(1) आलोचकों का मत है कि वास्तविक अर्थ में अन्तर्निरीक्षण एक अन्तर्निरीक्षण न रहकर अनुदर्शन हो जाता है क्योंकि चेतन अनुभूति के तत्वों के बारे में बतलाने में स्वभावतः अन्तर्निरीक्षक का कुछ समय लग जाता है और प्रायः इस समय व्यवधान में वह इन अनुभूतियों के बारे में कुछ भूल जाता है। टिचेनर इस आलोचना से सहमत नहीं हैं और उनका मत है कि अन्तर्निरीक्षक प्रशिक्षित होने पर ऐसा नहीं करते हैं।

(2) कुछ आलोचकों का मत है कि अन्तर्निरीक्षण से स्वयं चेतन अनुभूति की अन्तर्वस्तु में ही परविर्त्तन आ जाता है। जैसे-यदि कोई व्यक्ति क्रोध में हुई अनुभूति का अन्तर्निरीक्षण करना प्रारंभ कर दे तो स्वयं क्रोध ही समाप्त होजाता है। इस अलोचना का भी उत्तर देते हुए टिचेनर ने कहा कि प्रशिक्षित अन्तर्निरीक्षक के साथ ऐसा नहीं होता है क्योंकि अभ्यास से वे अन्तर्निरीक्षण के कार्य अचेतन ढंग से पूरा कर लेते हैं।

(3) इस विधि की तीसरी आलोचना यह है कि विभिन्न प्रयोगशालाओं में मनोवैज्ञानिक इस विधि का उपयोग करने पर किसी एक परिणाम पर न पहुँचकर भिन्न-भिन्न परिणाम पर पहुँच जाते हैं।

(4) अलोचकों का मत है कि मनोविज्ञान के कुछ पहलू ऐसे हैं जिन्हें अन्तर्निरीक्षण विधि से अध्ययन करना संभव नहीं है। जैसे-अचेतन प्रभाव जो कुसमायोजन में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है,का अध्ययन अन्तर्निरीक्षण द्वारा नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा कई महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक तथ्यों का पता पशुओं के अध्ययन से चलता है हालांकि पशु अन्तर्निरीक्षण नहीं कर पाते हैं। चूँकि पशु अन्तर्निरीक्षण नहीं करते हैं, अतः ऐसा नहीं होना चाहिए था।

इन सभी आलोचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि संरचनावादियों का अन्तर्निरीक्षण विधि अपर्याप्त था तथा उसके आत्मनिष्ठ एवं अविश्वसनीय आँकड़े प्राप्त हो रहे थे।

3. गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी संरचनावादिओं के तात्विक विश्लेषण के विरोध में आवाज बुलन्द की गयी। इन लोगों का मत है कि मनोवैज्ञानिक घटनाओं का अध्ययन समग्र रूप में करना चाहिए। चूँकि समग्रता या अंशों का योग नहीं होता है इसलिए समग्रता का विश्लेषण उसके अंशों में नहीं करना चाहिए।

इन सभी आलोचानाओं के बावजूद एक सम्प्रदाय के रूप में मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र प्रयोगात्मक विज्ञान के रूप में स्थापित करने में संरचनावाद काफी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। टिचेनर द्वारा संरचनावाद की स्थापना करने में वास्तविक प्रेरणा स्रोत वुण्ट रहे जो उनके गुरु थे और पूरे जीवन काल में टिचेनर अपने गुरु के प्रति निष्ठा दिखलाते हुए उनके विचारों को क्रमबद्ध और वैज्ञानिक बनाते रहे।

1.4 वुण्ट एवं टिचेनर का तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study of Wundt and Titchner)

विलियम वुण्ट जर्मनी के लिपजिग विश्वविद्यालय में टिचेनर के शिक्षक थे। टिचेनर ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से नया मनोविज्ञान वुण्ट से सीखने आये थे। लिपजिग से ऑक्सफोर्ड लौटने के बाद वे तुरन्त अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय चले गए जहाँ उन्होंने संरचनावाद की स्थापना की। इस सम्प्रदाय के तहत वे वुण्ट के विचारों को परिवर्द्धित एवं परिमार्जित करते हैं। सचमुच में, अपने इस प्रयास के कारण वे वुण्ट से भी अधिक वुण्टियन माने जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में यह बिल्कुल ही स्वाभाविक था कि वुण्ट से उनकी कुछ समानता तथा कुछ विषमता हो। वुण्ट का टिचेनर में समानता के प्रमुख बिन्दु निम्नांकित हैं—

(1) वुण्ट के समान टिचेनर ने भी यह मत व्यक्त किया कि मनोविज्ञान चेतन अनुभूति के अध्ययन का विज्ञान है। अतः दोनों मनोवैज्ञानिकों के लिए मनोविज्ञान की विषय-वस्तु चेतन अनुभूति थी।

(2) दोनों मनोवैज्ञानिकों द्वारा अन्तर्निरीक्षण प्रेक्षण तथा प्रयोग को मनोविज्ञान की प्रमुख विधि माना गया। वुण्ट के समान टिचेनर ने भी यह मत व्यक्त किया कि अन्तर्निरीक्षण या आत्मप्रेक्षण प्रयोग का एक अंश है। दोनों ही मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षित अन्तर्निरीक्षकों की आवश्यकता जतायी गयी।

(3) वुण्ट के समान टिचेनर भी मनोवैज्ञानिक समानान्तरवाद में विश्वास रखते थे। इसलिए मन-शरीर समस्या के बारे में इन दोनों मनोवैज्ञानिकों के विचार लगभग एक समान थे।

(4) दोनों ने मनोविज्ञान के स्वरूप को प्रयोगात्मक बनाने की दिशा में सराहनीय प्रयास किये।

इन समानताओं के बावजूद वुण्ट तथा टिचेनर में कुछ स्पष्ट विभेद या असमानता है जिसे निम्नांकित पाँच बिन्दुओं के तहत उल्लेख किया जा सकता है—

(1) वुण्ट का विचार था कि चेतन अनुभूति के दो तत्व होते हैं—संवेदन तथा भाव। टिचेनर का मत था कि चेतन अनुभूति के तीन तत्व होते हैं—संवेदन, भाव एवं प्रतिमा। वुण्ट ने प्रतिमा को चेतन अनुभूति का एक स्वतंत्र तत्व नहीं माना था बल्कि उसे संवेदनाओं के मिश्रण से उत्पन्न होने वाला एक तत्व माना था।

(2) वुण्ट के अनुसार चेतन अनुभूति के दो प्रमुख विशेषताएँ होती हैं—गुण तथा तीव्रता। टिचेनर ने इस दो की सूची में दो और जोड़ा है। वे दो हैं—अवधि तथा स्पष्टता। इसके अलावा टिचेनर ने एक और विशेषता अर्थात् विस्तार का वर्णन किया है। लेकिन टिचेनर ने यह भी स्पष्ट किया कि विस्तार की यह विशेषता सिर्फ दृष्टि एवं स्पर्श के संवेदों में होती है। टिचेनर ने यह बतलाया कि स्पष्टता की विशेषता भाव में नहीं की जाती है।

(3) टिचेनर ने वुण्ट द्वारा प्रतिपादित भाव के द्विविमीय सिद्धान्त को अस्वीकृत कर दिया था। वुण्ट द्वारा भाव के तीन आयामों अर्थात् सुख-दुख, तनाव शिथिलता, उत्तेजना-शांत में से टिचेनर ने अन्तिम दो आयामों को अस्वीकृत कर दिया क्योंकि ये दोनों सभी तरह की अनुभूतियों के भाव नहीं होते हैं बल्कि मात्र गति अनुभूति के भाव हैं।

(4) टिचेनर ने मनोविज्ञान के प्रयुक्त पहलुओं की आलोचना की हैं। उनका मत है कि मनोविज्ञान का एक मौलिक एवं सामान्य विज्ञान है जिसका कोई व्यावहारिक उद्देश्य नहीं है। इसलिए मनोविज्ञान की प्रयुक्ता शाखाएँ जैसे—बाल मनोविज्ञान, पशु मनोविज्ञान तथा असमान्य मनोविज्ञान जो इस समय उभर रहा था, पर टिचेनर ने ध्यान यह कहते हुए नहीं दिया कि इन सबों से कोई मनोवैज्ञानिक सूचनाएँ नहीं मिल पाती हैं। दूसरी तरफ, वुण्ट ने ऐसा किया और इस बात पर पर्याप्त बल दिया कि बच्चों एवं असामान्य के व्यवहारों से भी महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक सूचनाएँ मिलती हैं।

(5) वुण्ट के एक व्यक्ति विशेष होते हुए भी इतिहासकारों ने उन्हें अपने आप में एक संस्था माना है जिन्होंने मनोविज्ञान के कार्य क्षेत्र को ही सिर्फ नहीं बदला परन्तु बहुत सारे मनोवैज्ञानिकों को भी प्रशिक्षित किया। टिचेनर को इतिहासकारों ने इतना महत्व नहीं दिया है और कहा है कि उनके योगदानों एवं प्रयासों को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि वे मूलत: एक वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक हैं जिन्होंने वही कार्य किया, परन्तु सीमित दायरे में।

स्पष्ट हुआ कि कुछ समानताओं के बावजूद टिचेनर एवं वुण्ट में असमानताएँ हैं।

1.5 प्रकार्यवाद से एक परिचय (Functionalism)

संरचनावादी प्रकृति के विवरण से सम्बन्ध रखते थे और ये प्रश्न करते थे : क्या होता है और कैसे होता है ? "क्यों" के प्रश्न से उनका कोई सम्बन्ध न था। इसके विपरीत, प्रकार्यवाद क्या, कैसे तथा क्यों–तीनों प्रश्नों से सम्बन्ध रखते थे और वे उन कार्यों के अन्वेषण पर बल देते थे,जो मन बाह्य जगत के साथ अपने आपको अनुकूलन करने में करता है।

प्रकार्यात्मक अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान से विशेष सम्बन्ध रखता है, जो अमरीकी प्रकार्यवादी मनोविज्ञानिकों द्वारा विकसित हुआ था। प्रकार्यवाद का परसिर 1850 से वर्त्तमान समय तक है, इसका ऐतिहासिक विकास कई एक बौद्धिक नेताओं द्वारा प्रभावित था। उनमें से एक थे डार्बिन(1809-1882) और दूसरे थे गैल्टन(1822-1911)। ये दोनों इंग्लैण्ड के निवासी थे। वस्तुत: प्रकार्यात्मक प्रवृत्ति का स्रोत ब्रिटिश मनोविज्ञानी है।

यह सही है कि प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान ब्रिटिश मनोविज्ञानियों के कारण हुआ किन्तु इसका विकास तथा उन्नति अमरीका में हुई। इस विकास का श्रेय विलियम जेम्स को है। उनके साथ स्टेलने हाल तथा कटेल को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

1.5.1 प्रकार्यवाद मनोविज्ञान के पूर्वसंपादक के रूप में विलिम्यम जेम्स (William James)

जेम्स प्रकार्यवाद मनोविज्ञान के प्रमुख अमरीकी पूर्वाह्न थे। जेम्स के प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान का अग्रगामी तथा प्रवर्तक मानने के तीन कारण हैं : उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था। उन्होंने वुण्ट के मनोविज्ञान का विरोध किया और साथ ही यह भी कहा कि चेतना का तत्वों में अंतर्दशनात्मक विश्लेषण नहीं किया जा सकता। उन्होंने मन को देखने का नया मार्ग दिखाया जो प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान के लिये संगत था।

जेम्स के मनोविज्ञान में प्रकार्यवाद का प्रत्यय स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने मनोविज्ञान को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वह आगे चलकर अमरीकी प्रकार्यवाद का केन्द्रीय सिद्धान्त बन गया।

1.5.2 प्रकार्यवाद मनोविज्ञान के पूर्व संपादक के रूप में स्टैनले हॉल (St. Hall) :

हॉल अपने समय के बड़े प्रभावशाली मनोविज्ञानी थे। उन्होंने कई एक क्षेत्रों में बड़े उत्साह और लगन के साथ कार्य किया। प्रकार्यवाद की विधिवत् स्थापना के लिए उनकी सीधी देन न थी, किन्तु नवीन क्षेत्रों तथा क्रियाओं के प्रति जो उनकी देन थी, उनमें प्रबल प्रकार्यात्मक महक थी।

1.5.3 प्रकार्यवाद मनोविज्ञान के पूर्व संपादक के रूप में शिकागो संप्रदाय का जॉनडेवी (John Devey)

मनोविज्ञान के क्षेत्र में डेवी को जेम्स का उतराधिकारी माना जाता है। वास्तविक बात यह है कि डेवी के कारण ही प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान चमक उठा। उन्होंने 1896 में एक लेख लिखा जिसमें उन्होंने मनोवैज्ञानिक अणुवाद, अधिभूतोपासना, तथा प्रतिवर्त चाप के अवव्याख्यावाद की आलोचना की। उन्होंने उसमें यह तर्क भी

उपस्थित किया कि प्रतिवर्त अनुक्रिया में प्राणी का जो व्यवहार होता है उसके संवेदी प्रेरक तत्वों में आकृत्यतरण नहीं किया जा सकता और न चेतना को प्रथमिक घटकों में विश्लेषित किया जा सकता है। जब व्यवहार के इस प्रकार कृत्रिम विश्लेषण तथा आकृत्यतंरण कर दिया जाता है, तब व्यवहार का कोई अर्थ नहीं रहता। डेवी ने यह भी बताया कि व्यवहार को कृत्रिम वैज्ञानिक रचना नहीं समझना चाहिए, अपितु यह समझना चाहिए कि प्राणी के लिए व्यवहार इसलिए महत्वपूर्ण है कि उसके द्वारा वह अपने आपको पर्यावरण में अनुकूल कर लेता है। अतः डेवी ने यह बताया कि मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य यह है कि वह समूचे प्राणी को अपने पर्यावरण में कार्य करते हुए अध्ययन करे।

डेवी विकास के सिद्धान्त से अत्यधिक प्रभावित थे और उनका दर्शन सामाजिक परिवर्त्तन के विचार पर आधारित था। वे स्थैतिक वस्तुओं का विरोध करते थे और उस प्रगति का समर्थन करते थे जिसको मुनष्य अपनी बद्धि द्वारा वास्तविकता के साथ संघर्ष करके प्राप्त करता था। इस संघर्ष में प्राणी के लिए चेतना और व्यवहार दोनों कार्य करते हैं। इसमें चेतना ऐसी उपयोगी क्रिया करती है जो प्राणी को अतिजीविता और प्रगति करने योग्य बना देती है। डेवी के दृष्टिकोण से प्रकार्य पूर्ण समन्वय है, जिसके द्वारा प्राणी अपने अतिजीविता के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। इस प्रकार प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान कार्यरत जीव का अध्ययन है।

डेवी ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि मनुष्य अतिजीविता के लिए जो प्रयत्न करता है वह ज्ञान में परिणत हो जाता है और अतिजीविता के लिए ज्ञान एक शस्त्र है, तथा साथ ही वह समायोजन की प्रक्रिया में एक साधन भी है। जीवन शिक्षा है, इस कारण उन्होंने मनोविज्ञान में सीखने की समस्या को एक महत्वपूर्ण विचार्य विषय माना।

1.5.6 प्रकार्यवाद के पूर्व संस्थापक के रूप में गवे स० कर्र (Carr)

कर्र के अनुसार मनोविज्ञान की विषय-वस्तु मानसिक क्रिया है और मानसिक क्रिया में स्मृति, प्रत्यक्ष, भावना, कल्पना तथा संकल्प की प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं। मानसिक क्रिया का कार्य अर्जित करना, स्थिर करना, धारण करना, संगठित करना तथा अनुभवों का मूल्यांकन करना है, और साथ ही कार्य के निर्धारण में इन अनुभवों का उपयोग करना है।

कर्र ने मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करने के लिए अन्तर्दर्शन तथा विषयनिष्ठ अवलोकन की वैधता को स्वीकार किया। उन्होंने यह बताया था कि प्रयोगात्मक विधि अधिक उपयोगी है किन्तु इसके साथ यह भी माना कि मन का उपयुक्त प्रयोगात्मक नियंत्रण असंभव है।

संक्षेप में कर्र के प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान में दो बातें महत्वपूर्ण हैं : (1) उनका कहना है कि अनुकूली कार्य की दो अवस्थाएँ होती हैं, एक प्रारम्भिक अवस्था और दूसरी अनुक्रियात्मक अवस्था। प्रारम्भिक अवस्था ध्यानात्मक समायोजन की है, जिसमें प्रत्यक्षीकरण होता है और दूसरी में अनुकूलनशील कार्य स्वयंमेव होता है अतः कर के दृष्टिकोण से ध्यान वह है जिसकी वातावरण के व्यवहार करने की कार्यात्मक उपयेगिता है, (2) कर का कार्यात्मक पूर्वाग्रह यह है कि उनकी प्रत्यक्ष में बड़ी रुचि है। उनकी दृष्टि में प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान में प्रत्यक्ष के प्रक्रम को केन्द्रीय स्थान होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा है कि प्रत्यक्ष समायोजन करने में अपादान प्रक्रम है, क्योंकि इसके द्वारा ही पता चतला है कि वातावरण कैसा है और हमें उसके प्रति किस प्रकार अनुक्रिया करनी चाहिए।

1.5.7 कोलम्बिया प्रकार्यवादी मनोविज्ञान (Columbia Psychologists)

कोलम्बिया प्रकार्यवादियों का मत था कि जो आंकड़े उपयोगी हों उसे स्वीकार किया जा सकता है, न कि सिर्फ वहीं आंकड़े स्वीकार किये जाएंगे जो द्वैतवाद से संबंधित हों। मनोविज्ञान को मानसिक क्रियाओं का वर्णन की जगह उसकी व्याख्या पर अधिक बल अर्थात् क्या की जगह पर क्यों पर अधिक बल देना चाहिए।

कोलम्बिया प्रकार्यवादियों द्वारा यद्यपि मुक्तिवाद पर अधिक बल डाला गया फिर भी इसके प्रभावों का आकलन कठिन है क्योंकि व्यक्ति जिसकी व्याख्या करता है, उसका स्वरूप कुछ निश्चित होता है, न कि स्वतंत्र प्रकृति का होता है। हाइडब्रेडर (1924) जिसने कोलम्बिया विश्वविद्यालय से वुडवर्थ के निर्देशन में शोधकार्य करके पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की, ने इस बिन्दु पर अति सुन्दर टिप्पणी करते हुए कहा है--"कोलम्बिया" के मनोविज्ञान का वर्णन आसान नहीं है। इसमें कोई निश्चित सिद्धांत नहीं थे, इसे अवरोध ढंग से पढ़ाया जाता था तथा एक संगठित स्कूल में पायी जाने वाली पैतृक रोब भी था। इसके बावजूद इसमें निश्चित अभिज्ञेय विशेषताएँ थीं।"

1.5.8 कोलम्बिया प्रकार्यवाद मनोवैज्ञानिक के रूप में राबर्ट ऐसेन्स वुडवर्थ

वुडवर्थ प्राकार्यवादी मनोवैज्ञानिक होने के साथ-साथ एक गत्यात्मक मनोवैज्ञानिक भी थे। उनमें शिकागो प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिकों से कुछ समानता देखने को मिलती है। यद्यपि वुडवर्थ ने अपने आप को एक गत्यात्मक मनोवैज्ञानिक कहा है लेकिन वास्तव में वे पहले एक प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिक हैं और बाद में गत्यात्मक मनोवैज्ञानिक।

1.5.9 जेम्स मैक्कीन कैटेल

केटेल जेम्स के दूसरे समकालीन व्यक्ति थे। अनेक अर्थों मे कैटेल के जीवन तथा कार्य में अमरीकी मनोविज्ञान का प्रकार्यवादी भाव दिखाई देता था। उनको इस बात के लिए श्रेय है कि उन्होंने मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन के प्रति व्यावहारिक परीक्षण अभिविन्यस्त उपागम की दिशा में अमरीका मनोविज्ञान में प्रभावशाली आंदोलन को प्रभावित किया। उनका मनोविज्ञान जितना मानवीय योग्यताओं से सम्बन्धित तथा उतना चेतन अन्तर्वस्तु से नहीं था और इस दृष्टिकोण से वे साहचर्यवादी मनोविज्ञानी से अधिक उनका औपचारिक सम्बन्ध न था। यह सही है कि अमरीकी प्रकार्यवादी भाव के प्रतिनिधि थे क्योंकि उन्होंने इस बात पर बल दिया कि मानसिक प्रक्रियाओं की प्राणी के लिए उपयोगिता होती है।

1.5.10 प्रकार्यवाद के पूर्व संपादक के रूप में शिकागो संप्रदाय के जेम्स रौलेड ऐंजिल (Chicago School)

ऐंजिल (Angell) ने प्रकार्यवादी आन्दोलन को एक संप्रदाय का रूप प्रदान किया। इन्हीं के प्रयत्न से शिकागो विश्वविद्यालय का मनोविज्ञान विभाग अपने समय का एक महत्वपूर्ण विभाग हो गया। ऐंजिल ने प्रकार्यवाद के सम्बध में तीन बातें बताई। वे इस प्रकार हैं :

1. प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान मानसिक कार्यों का मनोविज्ञान है, जो संरचनावाद द्वारा प्रतिपादित मानसिक तत्वों का विरोध करता है। उन्होंने वुण्ट और टिचेनर के तत्ववाद का पूर्ण विरोध किया और बताया कि प्रकार्यवाद का उद्देश्य यह खोज करना है कि मानसिक प्रक्रिया किस प्रकार कार्य करती है, क्या करती है, और किन अवस्थाओं में यह उपस्थित हो जाती है।

2. प्रकार्यवाद चेतना की आधारभूत उपयेगिताओं का मनोविज्ञान है। इस दृष्टिकोण से चेतना एक लक्ष्य की पूर्ति करती है : यह प्राणी की आवश्यकताओं और उसके पर्यावरण की मांगों के मध्य विचार करती है। इस प्रकार प्रकार्यवाद मानसिक प्रक्रियाओं का यह ध्यान रखकर अध्ययन करता है कि जैवक्रिया के भाग हैं और आंगिक विकास के भी अंग हैं।

3. प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान उन मनोदैहिक सम्बन्धों का मनोविज्ञान है जो प्राणी के पर्यावरण के साथ सम्बन्धों का विचार करता है। इस प्रकार प्रकार्यवाद में समस्त मन-शरीर कार्यों का समावेश हो जाता है। इस दृष्टि से अचेतन अथवा अभ्यास जनित व्यवहार के अध्ययन का द्वार खुल जाता है। प्रकार्यवाद मानसिक तथा

शारीरिक क्रियाओं में एक प्रकार का परस्पर सम्बन्ध मानता है और यह सम्बन्ध भौतिक जगत में पाये जाने वाले बलों के बीच जो सम्बन्ध होता है, उससे मिलता-जुलता है। प्रकार्यवाद मन और शरीर में वास्तविक भेद नहीं मानता और न उनको अलग-अलग सत्ताएँ मानता है। वह यह मानता है कि वे दोनों एक वर्ग के हैं और उनमें परस्पर अंतरण हो सकता है।

उडवर्थ ने कारण प्रभाव संबंध के अध्ययन पर बल डाला। वस्तुत: वे प्रकार्यवाद में विकासात्मक नियमों पर बल डालते थे। इस अर्थ में उन्हें एक आरंभिक उद्दीपन अनुक्रिया मनोवैज्ञानिक कहा गया है लेकिन बाद में उन्होंने उन चीजों को भी महत्व दिया जो प्राणी के भीतर होते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि उन्होंने भी सूत्र का महत्व दिया। उनके अनुसार प्राणी का एक महत्वपूर्ण दैहिक पहलू प्राणोद है और दूसरा प्रक्रम। व्यक्ति व्यवहार क्यों करता है ? इसका उत्तर प्रणोद से मिलता है तथा व्यवहार कैसे करता है ? इसका उत्तर प्रक्रम से मिलता है।

इस प्रकार यदि उडवर्थ के प्रकार्यवाद पर विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि उनका प्रकार्यावाद में सभी सम्प्रदायों के उत्तम चीजों का समावेश है। उडवर्थ का प्रकार्यवाद अन्य संप्रदायों के समान औपचारिक बंधनों से मुक्त है। इसलिए इसे एक स्वतंत्र प्रकार्यवाद भी कहा जाता है।

1.5.11 कोलम्बिया प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिक के रूप में ई० एल० थार्नडाइक (Thorndike)

थार्नडाइक के योगदान को काफी महत्वपूर्ण माना गया है। हाइडब्रेकर ने थार्नडाइक के योगदान की चर्चा करते हुए कहा है कि उनके शोध में पहली बार प्रयोगशाला में पशु की बुद्धि का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है जिसके कारण एक ऐसे सिद्धान्त का जन्म हुआ जो बाद के शोधों के लिए काफी महत्वपूर्ण माना गया। इन्हीं के शोध के आधार पर उद्दीपन तथा अनुक्रिया के बीच संबंध पर बल डाला गया। इनके बीच संबंध मजबूत और कमजोर हो जाने की व्याख्या थार्नडाइक ने अभ्यास नियम तथा प्रभाव नियम से किया। अभ्यास के अनुसार जब उद्दीपन अनुक्रिया के बार-बार दुहराया जाता है तो इनके बीच मजबूत संबंध बनते हैं जिसे सीखना कहा जाता है तथा जब इसे कम दुहराया जाता है तो यह संबंध कमजोर होता है और अंत में समाप्त हो जाता है। प्रभाव नियम के अनुसार यदि उद्दीपन अनुक्रिया संबंध पशु में संतुष्टि उत्पन्न करता है तो उसे पशु सीखता है अन्यथा छोड़ देता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रकार्यवाद में भी थार्नडाहक का योगदान है।

1.6 एक संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद (Functionalism as a System)

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, एक संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद शिकागो विश्वविद्यालय में उस समय अपनी लोकप्रियता के शिखर पर रहा जब कार्य मनोविज्ञान के अध्यक्ष थे। संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद के योगदानों को कार्य की विचारधाराओं को आधार मानते हैं जिसका वर्णन उनकी पुस्तक "साइकोलौजी : ए स्टडी ऑफ मेन्टल एक्टीविटी" में पर्याप्त है, निम्नांकित सात भागों में बांटकर प्रस्तुत किया जा सकता है।

१. मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु : कार्र के अनुसार मनोविज्ञान मानसिक क्रिया या अनुकूली व्यवहार का अध्ययन करता है। अत: मनोविज्ञान में अनुकूली व्यवहार एक मुख्य संप्रत्यय है। इसमें प्रत्यक्षण, स्मृति,भाव, निर्णय एवं इच्छा आदि प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। इन प्रक्रियाओं से व्यक्ति को वातावरण में समायोजन करने में मदद मिलती है। इस तरह से मनोविज्ञान का संबंध तत्वों या अंतर्वस्तु से न होकर प्रक्रियाओं से होता है। कार्र ने चेतन को बुद्धि के समान एक अमूर्त संप्रत्यय माना है। एक अमूर्त संप्रत्यय के रूप में, यह प्राणी का पर्यावरण के साथ समायोजन करने में कुछ मदद नहीं करता है। यह अनुकूली व्यवहार पर कोई बल नहीं डालता है। इस ख्याल से यह स्पष्ट हो जाता है कि कार्र प्रकार्यवादी मनोविज्ञान को व्यवहारवाद के नजदीक ला सकने में समर्थ हुए।

कार्र का मत था कि अनुकूली व्यवहार के तीन गुण होते हैं जो निम्नांकित हैं–

1. इस तरह के व्यवहार में एक अभिप्रेरण उद्दीपन होता है।
2. इस तरह के व्यवहार में एक संवेदी उद्दीपन होता है।
3. इस तरह की अनुक्रिया परिस्थिति को इस ढंग से परिवर्तित कर देती है कि उससे अभिप्रेरण उद्दीपन की तुष्टि हो जाती है।

कार्र ने तीन प्रविधियों का वर्णन किया है जिसके सहारे अनुकूली क्रिया द्वारा अभिप्रेरण उद्दीपन समाप्त हो जाता है जो निम्नलिखित हैं–

(1) पहला तरीका तो वह है जिसमें अनुकूली व्यवहार अभिप्रेरण को सीधे हटा सकने में समर्थ हो जाता है। जैसे–भोजन करने से भूख समाप्त हो जाती है।

(2) दूसरा, अनुकूली व्यवहार के होने से अभिप्रेरण अपने-आप अस्त-व्यस्त हो जाता है क्योंकि इससे और भी अधिक अभिप्रेरण उद्दीपन उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे–एक व्यक्ति जो कड़ी धूप में लकड़ी काटता है संभव है कि थककर वह लकड़ी काटना ही छोड़ दें।

(3) अनुकूली व्यवहार के कुछ ऐसे संवेदी परणिाम होते हैं जिनसे अभिप्रेरण अपने-आप समाप्त हो जाते हैं। जैसे–किसी व्यक्ति का हाथ जब गर्म बर्त्तन से स्पर्श हो जाता है, तो वह उसे हाथ से छोड़ देता है क्योंकि उसकी अंगुलियों में जलन होने लगती हैं।

2. अभिगृहीत : यद्यपि प्रकार्यवाद का कोई निश्चित अभिगृहीत नहीं था, मनोवैज्ञानिक क्रियाओं के बारे में प्रकार्यवादियों ने कुछ पूर्वकल्पनाएँ कर रखी हैं। मार्क्स तथा क्ररोनान-हिलिक्स (1987) के अनुसार ऐसी पूर्वकल्पनाएँ या अभिगृहीत निम्नांकित हैं–

(क) सभी क्रियाओं की उत्पत्ति किसी-न-किसी संवेदी उद्दीपन से होता है। इन संवेदी उद्दीपनों की अनुपस्थिति में कोई अनुक्रिया नहीं हो सकती है।

(ख) सभी संवेदी उद्दीपन से सिर्फ अभिप्रेरण ही नहीं बल्कि व्यवहार भी प्रभावित होते हैं।

(ग) प्रत्येक व्यवहार आन्तरिक रूप से अनुकूली एवं उद्देश्यपूर्ण होता है।

(घ) व्यवहार एक सतत एवं समन्वित प्रक्रिया होती है और इससे उद्दीपन परिस्थति में परिवर्त्तन होता है।

3. कार्य-प्रणाली :–कार्र ने मानसिक क्रियाओं के लिए कई विधियों का प्रतिपादन किया है। उन्होंने संरचनावादियों के अन्तर्निरीक्षण विधि को स्वीकार किया, परन्तु इसके साथ-ही-साथ सामान्य प्रेक्षण को भी महत्वपूर्ण बतलाया। कार्र का मत था कि प्रयोगात्मक विधि भी एक प्रमुख विधि है परन्तु साथ-साथ उन्होंने यह आशंका भी व्यक्त की कि मनुष्यों के साथ प्रयोग में यह विधि अधिक वैध नहीं हो सकती है क्योंकि मनुष्यों की क्रियाओं पर पूर्ण नियंत्रण जो इस विधि की सफलता के लिए आवश्यक है, संभव नहीं है। इस तरह से प्रकार्यवादियों द्वारा तीन विधियों को स्वीकृत किया गया है–अन्तर्निरीक्षण, सामान्य प्रेक्षण तथा प्रयोग।

4. मन-शरीर समस्या :–कार्र ने मन-शरीर समस्या की एक काफी सरल व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने मानसिक क्रिया को मनोदैहिक माना है। मानसिक क्रिया को इस अर्थ में मनोवैज्ञानिक या मानसिक माना जाता है। क्योकि व्यक्ति को इस क्रिया को करने का पूरा आभास होता है। इस आभास के अभाव में वह उस वस्तु का प्रत्यक्ष, चिन्तन आदि नहीं कर सकता है। मानसिक क्रिया इस अर्थ में दैहिक होती है कि यह दैहिक प्राणी की एक प्रतिक्रिया होती है। इस अर्थ में द्वैतवादी थे कि उन्होंने अनुभूति के मानसिक एवं दैहिक दोनों पहलुओं

की पहचान कर रखी थी परन्तु वे संरचनावादियों के समान इन दोनों को एक-दूसरे से अलग करने के अर्थ में द्वैतवादी नहीं थे।

5. आँकड़े का स्वरूप :—प्रकार्यवाद में पर्यावरण का वातावरण के साथ प्राणियों के होने वाले अनुकूलन या समायोजन पर अधिक बल डाला जाता है। समायोजन पर बल डालकर प्रकार्यवाद ने वतुनिष्ठ आंकड़ों पर भी बल डाला है। लेकिन समय बीतने के साथ-साथ प्रकार्यवाद का झुकाव वस्तुनिष्ठ आंकड़ों की ओर बढ़ता गया।

6. संबंध के नियम :—प्रकार्यवादियों के लिए संबंध के नियमों का तात्पर्य सीखने के नियमों से था। शायद यही कारण है कि प्रकार्यवादियों के शोध कार्यक्रम का यह केन्द्र बिन्दु था। इस सिलसिले में कार्र ने साहचर्य के नियमों को महत्वपूर्ण बतलाया जिसे उन्होंने साहचर्यवादी परम्परा से ग्रहण किये थे। उन्होंने साहचर्य के वर्णानात्मक नियमों तथा व्याख्यात्मक नियमों के बीच अन्तर किया। उनके अनुसार समानता के नियम को पहली श्रेणी में तथा समीप्यता के नियम को दूसरी श्रेणी में रखा जा सकता है। उन्होंने व्याख्यात्मक नियम को पुनः दो भागों में बांटा है—साहचर्य की उत्पत्ति या कार्य तथा साहचर्य की मौलिक शक्ति। सामीप्यता को पहली श्रेणी में रखा जा सकता है क्योंकि यह नियम साहचर्य की उत्पत्ति पर रोशनी डालता है। प्रकार्यात्मक शक्ति द्वारा इस तथ्य की व्याख्या होती है क्योंकि कुछ साहचर्य दूसरे साहचर्य से श्रेष्ठ होते हैं। किसी बारंबारता के नियम को भी इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। किसी साहचर्य को अधिक बार दोहराने से उसकी साहचर्यात्मक शक्ति में वृद्धि हो जाती है।

7. चयन की प्रक्रिया :—प्रकार्यवाद में कार्र द्वारा व्यवहार चयन के प्रक्रमों पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है। वे ध्यान अभिप्रेरण तथा सीखना को व्यवहार चयन के तीन प्रमुख एजेन्ट बतलाते हैं। उन्होंने ध्यान को संवेदी पेशीय समायोजन की संज्ञा दी है। उनका मत था कि ध्यान से प्रत्यक्षण में तीक्ष्णता आती है। अभिप्रेरण को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक सापेक्ष सतत् उद्दीपन को किसी निश्चित दिशा में व्यवहार के लिए निर्देशित करता है। कार्र ने सीखने को व्यवहार चयन का प्रमुख एजेन्ट माना है और यह निम्नांकित तीन तरीकों से संचालित होता है—

(क) अनुभूति द्वारा कुछ अनुकूली प्रक्रम या साहचर्य को व्यक्ति सीखता है।

(ख) जैसे-जैसे साहचर्य या अनुकूली प्रक्रमों को व्यक्ति सीखता है, उत्तेजन परिस्थिति के साथ पहले वे अनुक्रिया के साथ संबंधित हो जाते हैं तथा भविष्य में वे वही अनुक्रिया उत्पन्न कर सकने की क्षमता विकसित कर लेते हैं।

(ग) कुछ अनुकूली प्रक्रमों या साहचर्यों को सीख लिये जाते हैं क्योंकि वे समाज द्वारा लागू किये जाते हैं। जैसे—व्यक्ति किसी विशेष प्रजाति या जाति के प्रति स्नेह दिखलाना सीख लेता है।

1.7 प्रकार्यवाद की आलोचनाएँ (Criticism of Functionalism)

प्रकार्यवाद मनोविज्ञान खासकर अमेरिकन मनोविज्ञान का पहला संप्रदाय वास्तविक अर्थ में था। अतः इससे लोगों की उम्मीदें काफी बंध गयी थी। यह संप्रदाय अपने उद्देश्य की पूर्ति में बहुत हद तक सफल भी रहा परन्तु फिर भी इसके साथ कुछ खामियाँ थीं जिनमें प्रमुख निम्नांकित हैं—

1. कुछ आलोचकों का मत है प्रकार्यवाद ने अपने मौलिक संप्रत्यय "प्रकार्य" का प्रयोग कुछ अस्पष्ट एवं ढुलमुल ढंग से किया है जिससे किसी स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुंचना कठिन है। "प्रकार्य" शब्द के कई भिन्न अर्थ होते हैं। जैसे—प्रकार्य का एक अर्थ क्रिया जैसे—सांस लेना, प्रत्यक्ष करना, पचाना, खेलना, रोना आदि से होता है।

2. प्रकार्यवाद पर संरचनावाद द्वारा कस कर प्रहार किया गया। संरचनावादियों का मत है कि प्रकार्य, उपयोगिता तथा मूल्य के अध्ययन का स्वरूप कुछ ऐसा है कि इनमें से किसी का भी अध्ययन अन्तर्निरीक्षण विधि द्वारा संभव नहीं है। अत: इनमें से कोई भी मनोविज्ञान की विषय-वस्तु नहीं हो सकती है। प्रकार्यवादियों का मत था कि मनोविज्ञान को चेतन के तत्वों के अध्ययन का विज्ञान मानना सर्वथा एक भूल होगी।

3. प्रकार्यवादियों की अभिरुचि प्रयुक्त पहलुओं में अधिक थी और इसे और भी अधिक उपयोगी बनाने की दिशा में इनलोगों द्वारा कारगर कदम उठाये गए। आलोचकों का मत है कि प्रकार्यवादी विशुद्ध विज्ञान तथा प्रयुक्त विज्ञान से स्पष्ट अंतर करने में असमर्थ रहे। प्रयुक्त विज्ञानी के रूप में उनका स्थान और भी अधिक स्पष्ट होता यदि वे विशुद्ध विज्ञानियों से अपनी स्थिति अधिक स्पष्ट कर देते।

4. प्रकार्यवाद ने लक्ष्य तथा उपयोगितावादी संप्रत्ययों पर अधिक बल डाला है और ऐसा करने में आलोचकों ने प्रकार्यवादी को सोद्देश्यवादी कहा है अर्थात् वर्त्तमान का निर्धारण भविष्य पर होते कहा है।

5. हेनले (1957) ने प्रकार्यवाद की इस आधार पर आलोचना की है कि प्रकार्यवाद जरूरत से ज्यादा ग्रहणशील था। मार्क्स एवं क्रोनान-हिलिक्स (1987) ने प्रकार्यवादियों को नीरस ग्रहणशील कहा है। आलोचकों का मत है कि यदि हम इस संप्रदाय को ध्यान से देखें तो यह स्पष्ट होगा कि प्रकार्यवादियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न तरह की प्रविधियों एवं समस्याओं का चयन करके उसे और अधिक वैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया गया है। इससे इस संप्रदाय में मौलिकता की कमी हो गयी है।

इन आलोचनाओं के बावजूद प्रकार्यवाद का स्थान न केवल अमेरीकन मनोविज्ञान में बल्कि पूरे विश्वके मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण रहा है। प्रकार्यवादियों ने निश्चित रूप से मनोविज्ञान में संरचनावादियों द्वारा उत्पन्न कर दी गई आत्मनिष्ठता को कम किया है तथा वस्तुनिष्ठता की ओर उसे खींचा।

1.8 संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद में अन्तर (Differences between Structuralism and functionalism)

संरचनावाद मनोविज्ञान का वह संप्रदाय या स्कूल है जिसकी स्थापना टिचेनर द्वारा अमेररिका में की गयी। टिचेनर अपने गुरुदेव विलियम वुण्ट से जर्मनी से मनोविज्ञान सीख कर आये थे और उसमें वे कुछ संशोधन करके उसे नया आयाम दिये जो संरचनावाद के झण्डे के तहत फला-फूला। प्रकार्यवाद की स्थापना संरचनावाद के विरोध में शिकागो विश्वविद्यालय में जॉन डिवी तथा जेम्स एंजिल द्वारा की गयी जो बाद में हार्वे कार्र के नेतृत्व में फला-फूला। बाद में वुडवर्थ, थॉर्नडाइक तथा जे० एव० कैटेल ने उसकी सुगन्ध को कोलम्बिया विश्वविद्यालय तक पहुँचाए।

संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद दोनों में स्पष्ट अंतर है। परन्तु उस पर ध्यान देने के पहले इन दोनों में समानता के भी कुछ बिन्दु हैं जिन्हें जानना आवश्यक है। इन दोनों के बीच समानता के प्रमुख बिन्दु निम्नांकित हैं–

(1) संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद दोनों के अनुसार मनोविज्ञान के स्वरूप को प्रयोगात्मक बनाने पर बल डाला है।

(2) मनोविज्ञान के इन संप्रदायों द्वारा अन्तर्निरीक्षण को मनोविज्ञान की प्रमुख अध्ययन विधि माना गया है।

इन दो प्रमुख समानताओं के बावजूद इन दोनों संप्रदायों में कुछ स्पष्ट अंतर है जो निम्नांकित हैं–

(1) संरचनावाद द्वारा चेतन के तत्वों के अध्ययन पर बल डाला गया है जबकि प्रकार्यवाद तथा मानसिक प्रक्रियाओं के प्रकार्य जिनकी व्यावहारिक उपयोगिताएँ होती हैं, के अध्ययन पर बल डाला जाता है। इस तरह के बल देने में प्रकार्यवाद ब्रेनटालों एवं उसके क्रिया मनोविज्ञान के करीब आ जाता है।

(2) संरचनावाद के प्रवक्ता जैसे वुण्ड एवं टिचेनर का संबंध चेतन के विशुद्ध विश्लेषण से था। इस तरह से वे किसी भी कीमत पर मनोविज्ञान की स्थिति को एक विशुद्ध विज्ञान के रूप में देखना चाहते थे जहां उनके व्यावहारिक पक्ष के किसी पहलू का विशेष महत्व नहीं था। दूसरी तरफ प्रकार्यवाद का संबंध मनोविज्ञान के उपयेगितावादी पहलुओं से अधिक था।

(3) संरचनावादियों के अनुसार प्रकार्य चेतन में सीधे दिखाई नहीं देता है। इसलिए इसका अन्तर्निरीक्षणात्मक विश्लेषण संभव नहीं है। प्रकार्यवादियों द्वारा भी अन्तर्निरीक्षण विधि को स्वीकृत जरूर किया गया है लेकिन इन लोगों की मनोवृत्ति अन्तर्निरीक्षक के प्रति वैसी नहीं थी जैसी कि संरचनावादियों की थी। संरचनावादियों के अनुसार अन्तर्निरीक्षक को प्रशिक्षित होना आवश्यक था।

(4) मन-शरीर समस्या की व्याख्या में भी संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद में अन्तर था। प्रकार्यवादियों के अनुसार मानसिक क्रिया द्वैतवादी थी। दूसरे शब्दों में, यह मनोदैहिक था। चेतन मानसिक क्रिया का मानसिक भाग था तथा प्राणी की प्रतिक्रिया इसका दैहिक भाग थी। इन लोगों का मत था कि किसी भी मानसिक क्रिया में मानसिक तथा दैहिक दोनों तरह की क्रियाएँ पायी जाती हैं। संरचनावादियों द्वारा भी द्वैतवादी नियम को स्वीकृत किया गया। लेकिन इन लोगों के अनुसार मानसिक घटनाएँ तथा शारीरिक घटनाओं में स्पष्ट अन्तर था। संरचनावादियो ने यह बिल्कुल ही स्पष्ट कर दिया था कि मानसिक क्रियाओं को दैहिक क्रियाओं से पूर्णत: अलग किया जा सकता है तथा दोनों का अध्ययन स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। ये दोनों तरह की घटनाओं की आपस में कभी भी अन्त:क्रिया नहीं होती है।

स्पष्ट है कि कुछ समानता के बावजूद मनोविज्ञान के इन दोनों संप्रदायों में स्पष्ट अन्तर है।

1.9 सारांश

प्रस्तुत पाठ का सारांश निम्न प्रकार है-

1. वुण्ट को मनोविज्ञान के नवीन प्रयोगात्मक विज्ञान का संस्थापक होने के साथ-साथ संरचनात्मक मनोविज्ञान का अग्रगामी माना जाता है। वुण्ट ने तात्कालिक अनुभव को मनोविज्ञान की विषय वस्तु माना। यह अनुभव मध्यवर्त्ती अनुभव से भिन्न होता है। जैसे-हम इसको देखकर कहते हैं कि यह लाल है। इसका अर्थ हुआ कि हमारी रुचि फूल में है। इस बात में नहीं कि हम लाल का अनुभव कर रहे हैं। वुंट के अनुभव की अध्ययन विधि अर्न्तदर्शन या अन्तर्निरीक्षण थी। वुंट ने मनोविज्ञान की विषय वस्तु तथा विधि के तीन लक्ष्य बताए-चेतन प्रक्रियाओं को उनके आधारभूत तत्वों में विश्लेषित करना, यह खोज करना कि ये तत्व किस प्रकार से संबद्ध है तथा उनके संबंध में नियमों को निर्धारित करना। वुंट के अनुसार अनुभव अर्थात् चेतन अनुभव के दो तत्व हैं-संवेग तथा उद्दीपन। उनके अनुसार भावनाएँ संवेदनाओं के आत्मपूर्वक होती हैं, किन्तु वे सीधी किसी इन्द्रिय से उत्पन्न नहीं होती हैं। संवेदनाओं के साथ कुछ भावना गुण होते हैं और जब संवेदनाएँ कुछ अधिक जटिल अवस्था का रूप धारण कर लेती हैं तब संवेदनाओं के इस संमिश्रण में भावना गुण उत्पन्न होता है।

वुण्ट ने अपने अन्तदर्शन के आधार पर भावना के तीन स्पष्ट तथा स्वतंत्र विभाग दिए हैं जिसे त्रिविमीय सिद्धान्त कहा जाता है- सुख-दुख, खिंचाव-विश्रांति तथा उत्तेजना-प्रशान्त। वुण्ट ने संवेग के क्षेत्र में कहा कि संवेग इन प्राथमिक भावनाओं का जटिल सम्मिश्रण होते हैं।

2. टिचेनर को संरचनावादी मनोविज्ञान का औपचारिक संस्थापक माना जाता है। टिचेनर ने मनोविज्ञान की विषय वस्तु को परिभाषित करते हुए कहा है कि अनुभव करने वाले व्यक्ति पर आधारित अनुभूति ही मनोविज्ञान है। इस तरह से इनका भी अध्ययन विधि अन्त:र्निरीक्षण था। टिचेनर के अनुसार चेतन के तीन मुख्य तत्व होते हैं-संवेदन, प्रतिमा तथा भाव। उन्होंने चयनके नियम में बतलाया कि व्यक्ति क्यों कुछ उद्दीपनों को

चेतन से चयन कर लेता है। उनके अनुसार व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य अंतिम अवस्था में पहुँचना होता है क्योंकि इस अवस्था में से कम-से-कम प्रयास में व्यक्ति का ध्यान चेतन अनुभूति पर केन्द्रित रहता है। उन्होंने अपने सिद्धान्त में संबंध के महत्व को भी स्वीकार किया है। टिचेनर के लिए संवेग से तात्पर्य शरीर के भीतर संवेदन से उत्पन्न होने वाले तीव्र भावों से होता है। इसलिए चेतन अनुभूति का भाव ही संवेग का महत्वपूर्ण भाग होता है। उन्होंने चिन्तन के क्षेत्र में भी कार्य किये हैं।

3. वुण्ट तथा टिचेनर के विचारों में, चेतन अनुभूति, अन्तर्निरीक्षण, मनोदैहिक समानान्तरवाद प्रयोगात्मक अध्ययन, आदि में समानता पायी जाती है। इन समानताओं के बावजूद वुण्ट तथा टिचेनर में कुछ स्पष्ट विभेद हैं। जैसे--वुण्ट के अनुसार अनुभूति के दो तत्व संवेदन तथा भाव हैं जबकि टिचेनर के अनुसार अनुभूति के तीन तत्व संवेदन, भाव एवं प्रतिमा हैं। वुंट के अनुसार चेतन अनुभूति की दो प्रमुख विशेषता--गुण तथा तीव्रता है। टिचेनर ने इन दोनों विशेषता के अलावा अवधि तथा स्पष्टता को भी स्वीकार किया है। टिचेनर ने वुण्ट के त्रिविमीय सिद्धान्त को अस्वीकृत कर दिया।

इस तरह स्पष्ट होता है कि टिचेनर तथा वुण्ट में कुछ समानाताओं के बावजूद असमानाताएँ हैं।

4. संरचनावाद को रूढ़िवादी स्कूल कह कर तीव्र आलोचना की गयी है। टिचेनर का संरचनावाद काफी संकीर्ण होने के साथ-साथ चेतन अनुभूति तक ही सीमित रहा। इसकी विधि में अन्तर्निरीक्षण होने के कारण पक्षपात होने की संभावना रहती है जिससे वस्तुनिष्ठता बहुत ही कम हो जाती है। इसकी विधि द्वारा अचेतन के प्रभाव पर अध्ययन करना संभव नहीं है। इसकी एक आलोचना गेस्टाल्टवादियों ने भी तत्व विशलेषण के संबंध में की है कि मनोवैज्ञानिक घटनाओं का अध्ययन समग्र रूप से करना चाहिए। समग्रता अंशों का योग नहीं होता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र प्रयोगात्मक मनोविज्ञानके रूपमें स्थापित करने में संरचनावाद काफी महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

5. प्रकार्यवाद मनोविज्ञान ब्रिटिश मनोवैज्ञानियों के कारण हुआ परन्तु इसका विकास तथा उन्नति अमेरिका में हुई। इस विकास का श्रेय विलियम जेम्स को जाता है। उन्होंने वुंट के मनोविज्ञान का विरोध करते हुए मन को देखने का नया मार्ग दिखाया जो प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान के लिए संगत था। विलियम जेम्स के साथ-साथ स्टैलने हाल, जैम्स, मैक्कीन कैटेल का भी योगदान है।

शिकागो विश्वविद्यालय में इस सम्प्रदाय का विकास सबसे ज्यादा हुआ। 1894 में यहाँ डेवी तथा ऐंजिल आए और उसके नेतृत्व में मनोविज्ञान का कार्य आगे बढ़ा। फिर बाद में उनके उत्तराधिकारी हार्वेकर की अध्यक्षता में यह मनोविज्ञान चलता रहा। डेवी के कारण ही प्रयोगात्मक मनोविज्ञान चमक उठा। डेवी के अनुसार चेतना ऐसी उपयोगी क्रिया करती है जो प्राणी को अतिजीविता और प्रगति करने योग्य बना देती है, डेवी के दृष्टिकोण से प्रकार्यपूर्ण समन्वय है जिसके लिए प्राणी अपनी अंतजीविता के लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

ऐंजिल ने प्रकार्यवाद आंदोलन को एक संप्रदाय का रूप प्रदान किया। ऐंजिल ने प्रकार्यवाद के संबंध में तीन बातें बतलायी हैं—प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान मानसिक कार्यों का मनोविज्ञान है। प्रकार्यवाद चेतना की आधारभूत उपयोगिताओं का मनोविज्ञान है। प्रकार्यात्मक मनोविज्ञान उन मनोदैहिक संबंधों का मनोविज्ञान है जो प्राणी के पर्यावरण के साथ संबंधों का विचार करता है।

हार्वेकर के अनुसार मनोविज्ञान की विषय वस्तु मानसिक क्रिया है और मानसिक क्रिया में स्मृति प्रत्यक्षण, भावना,कल्पना तथा संकल्प की प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं।

6. एक संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद उस समय लोकप्रियता के शिखर पर रहा जब कार्र मनोविज्ञान के अध्यक्ष थे। सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद के योगदानों को प्रकार्यवाद की विचारधाराओं का आधार मानते हैं

जिसे सात भागों में बाँटकर प्रस्तुत किया गया है–मनोविज्ञान की परिभाषा मंद विषय वस्तु अभिगृहीत, कार्य प्रणाली विधि, मन-शरीर समस्या, आंकड़े का स्वरूप, संबंध का नियम, चयन की प्रक्रिया आदि। कार के अनुसार मनोविज्ञान मानसिक क्रिया या अनुकूली व्यवहार का अध्ययन करता है। इसमें प्रत्यक्ष स्मृति, भाव, निर्णय एवं इच्छा आदि प्रक्रियाएँ सम्मिलित रही हैं।

अत: कार्य ने प्रकार्यवाद के मुख्य तत्वों को काफी स्पष्ट ढंग से उपस्थित किया है। यह पहला अमेरिकन स्कूल था जिसने मनोविज्ञान के प्रयुक्त पहलू पर बल डालकर मनोविज्ञान को आमलोगों के लिए उपयोगी सिद्ध किया।

7. इस संप्रदाय के कुछ आलोचकों का कहना है कि प्रकार्य का प्रयोग कुछ अस्पष्ट एवं ढुलमुल ढंग से किया गया है। इसके दूसरे आलोचकों का कहना है कि प्रकार्यवादी विशुद्ध विज्ञान तथा प्रयुक्त विज्ञान में अन्तर करने में असमर्थ रहे। कुछ आलोचकों ने कहा कि इस संप्रदाय में मौलिकता की कमी है।

इन आलोचनाओं के बावजूद प्रकार्यवाद का स्थान न केवल अमेरिकन मनोविज्ञान में बल्कि पूरे विश्व के मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण रहा है।

8. संरचनावाद द्वारा चेतन तत्वोंके अध्ययन पर बल डाला गया है जबकि प्रकार्यवाद में मानसिक प्रक्रियाओंके प्रकार्य पर बल डाला गया है। संरचनावाद का संबंध चेतन के विशुद्ध विश्लेषण से था जबकि प्रकार्यवाद का संबंध मनोविज्ञान के उपयोगितावादी पहलुओं से अधिक था।

अत: प्रकार्यवाद का मनोविज्ञान के क्षेत्र में अपना अलग ही महत्व रहा है।

1.10 पाठ में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्द

संरचनात्मक, अग्रगामी, अन्वेषण, उपागम, आत्मसात, विश्लेषित, उत्तरकालीन, तात्कालिक अनुभव, मध्यवर्त्ती, विघटन, स्वअवलोकन, अन्तर्दर्शन, अभिलाषा, परिशुद्ध, संवेदांग, उद्दीप्त, वल्कुटीय, प्रमस्तिष्क, सम्मिश्रण, अन्तर्दर्शन, अवलोकन, त्रिविमीय, विश्रान्ति, परिवर्द्धित, स्ट्रक्चरल, तात्कालिक, अनुभूतियाँ, औपचारिक, आउटलाइन, शिथिल, संप्रदाय, प्रतिमारूपी, पूर्वसंपादक, अनुप्रयुक्त, पूर्वाह्न

1.11 अभ्यास के प्रश्न

1.11.1 लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. प्रकार्यवाद से आप क्या समझते हैं ?

   उत्तर–देखें-1.5

2. एक सम्प्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद का वर्णन करें।

   उत्तर–देखें 1.6

3. संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद में अन्तर स्पष्ट करें।

   उत्तर–देखें 1.8

4. संरचनावाद की आलोचनाओं का वर्णन करें।

   उत्तर–देखें 1.3

5. प्रकार्यवादकी **आलोचनाओं** का वर्णन करें।

   उत्तर–देखें 1.7

1.11.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रकार्यवाद से आप क्या समझते हैं? संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद में अन्तर करें।

   उत्तर–देखें 1.5 तथा 1.8

2. ई० वी० टिचेनर के संरचनात्मक मनोविज्ञान की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

   उत्तर–देखें 1.2 तथा 1.3

3. विल्हेम वुण्ट के योगदानों का वर्णन करें।

   उत्तर–देखें 1.1

1.12 प्रस्तावित पाठ

1. मनोविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास : **अजीमुर्रहमान एवं अशरफ जावेद**
2. मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त : **शर्मा जे० डी०**
3. Contempor ary Schools of Psychology : **Woodworth and Sheehan**
4. मनोविज्ञान का इतिहास : **डा० राम नाथ शर्मा**

◆◆◆

व्यवहारवाद
Behaviourism

पाठ-संरचना

2.0 उद्देश्य
2.1 एक सम्प्रदाय के रूप में वाटसोनियन व्यवहारवाद
2.2 वाटसन के व्यवहारवाद की द्वितीयक विशेषताएँ
2.3 वाटसन का प्रयोगात्मक सूत्रीकरण
2.4 वाटसन के व्यवहारवाद की आलोचना
2.5 उत्तरकालीन व्यवहारवाद
  2.5.1 उत्तरकालीन व्यवहारवाद में इडविन आर० गथरी (Guthrie) का योगदान
  2.5.2 उत्तरकालीन व्यवहारवाद में हल (Hull) का योगदान
  2.5.3 उत्तरकालीन व्यवहारवाद में वी० एफ० स्किनर का योगदान
  2.5.4 उत्तरकालीन व्यवहारवाद में इ० सी० टॉलमैन का योगदान
  2.5.5 उत्तरकालीन व्यवहारवाद में जे० आर० कन्टोर का अन्तर-व्यवहारवाद का योगदान
  2.5.6 उत्तरकालीन व्यवहारवाद में अलबर्ट बण्डुरा का योगदान
2.6 प्रारम्भिक व्यवहारवाद एवं उत्तरकालीन व्यवहारवाद में अन्तर
2.7 सारांश
2.8 पाठ में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्द
2.9 अभ्यास के लिए प्रश्न
  2.9.1 लघु उत्तरीय प्रश्न
  2.9.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
2.10 प्रस्तावित पाठ

2.0 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ में पाठक को व्यवहारवाद एवं उसके योगदानों के बारे में बताया जाएगा। साथ ही साथ उत्तरकालीन व्यसवहारवादी मनोवैज्ञानिक जैसे–गथरी, हल, स्किनर, टॉलमैन, कैन्टोर एवं बैन्टूरा इत्यादि के योगदानों की संक्षिप्त चर्चा की जाएगी। प्रारम्भिक व्यवहारवाद एवं उत्तरकालीन व्यवहारवाद के बीच क्या अन्तर है, इसके बारे में भी पाठक को स्पष्ट रूप से जानकारी दी जाएगी। अन्य पाठ की भाँति यहाँ भी पाठ का सारांश, पाठ में प्रयुक्त शब्द कुंजी, अभ्यास के लिए प्रश्न तथा पाठ के लिए अन्य उपयोगी सामाग्रियों को भी सम्मिलित किया जाएगा। हमारा विश्वास है कि पाठक उससे लाभान्वित होंगे।

2.1 एक संप्रदाय के रूप में वाटसोनियन व्यवहारवाद (Watsonian Behaviourism as a system)

इस संप्रदाय या स्कूल की स्थापना संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद के विरोध में हुई। मनोविज्ञान का यह स्कूल काफी प्रबल रहा और अपनी इस प्रबलता के कारण ही इसे मनोविज्ञान में द्वितीय बल के रूप में भी जाना जाता है। प्रथम बल मनोविश्लेषण का दूसरा नाम है।

वाटसन के व्यवहारवाद के दो उपसंप्रदाय हैं–प्राथमिक तथा द्वितीयक। वाटसन के प्राथमिक व्यवहारवाद के दो मुख्य पहलू हैं–धनात्मक पहलू तथा नकारात्मक पहलू। वाटसन के धनात्मक पहलू में वस्तुनिष्ठ मनोविज्ञान पर बल डाला गया है। वे पशुमनोविज्ञान की प्रविधियों एवं नियमों को मानव मनोविज्ञान पर लागू करना चाहते थे। उनके लिए व्यवहार का अध्ययन, न कि चेतना का अध्ययन, मनोवैज्ञानिकों के लिए वैज्ञानिक आंकड़े के मुख्य स्रोत हैं। व्यवहारवाद के इस पहलू को "आनुभविक व्यवहारवाद या कार्य-विधि व्यवहारवाद कहा गया।" वाटसन के व्यवहारवाद का नकारात्मक पहलू टिचेनर तथा वुण्ट के अन्तर्निरीक्षणात्मक मनोविज्ञान तथा एंजिल के प्रकार्यवाद को अस्वीकृत किया जाना था।

एक प्राथमिक संप्रदाय के रूप में वाटसन के व्यवहारवाद की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन निम्नांकित शीर्षकों के तहत किया जा सकता है–

1. मनोविज्ञान की परिभाषा–वाटसन के लिए मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की एक शाखा है जो मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। व्यवहार का अर्थ यहाँ विस्तृत है जिसमें "शाब्दिक" अभिव्यक्ति भी सम्मिलित है। अत: व्यक्ति द्वारा कुछ कहने या बोलने को भी व्यवहार में ही सम्मिलित किया गया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि मनोविज्ञान की विषय वस्तु न चेतना है न मानसिक कार्य और न ही किसी तरह की मनोदैहिकी प्रक्रियाएँ हैं।

2. मनोविज्ञान की विधियाँ–वाटसन ने मनोविज्ञान की वैज्ञानिक विधि के रूप में अन्तर्निरीक्षण को अस्वीकृत कर दिया था। चूँकि मनोविज्ञान व्यवहार का वस्तुनिष्ठ विज्ञान है, अत: इसकी विधियाँ निश्चित रूप से आनुभविक होंगी। वाटसन द्वारा मानोविज्ञान की निम्नांकित चार विधियों की पहचान की गयी है–

(क) प्रयोग एवं प्रेक्षण–वाटसन का प्रयोगात्मक कार्यक्रम बड़ा ही मजबूत तथा पूर्वनिर्धारित था। एक प्रयोगकर्त्ता के रूप में उन्होंने प्रयोगात्मक विधि को महत्वपूर्ण बतलाया। परन्तु प्रयोगशाला के बाहर के अध्ययनों के लिए वे उद्दीपन अनुक्रिया संबंध के प्रेक्षणों को भी महत्वपूर्ण बतलाया। उनका मत था कि वैज्ञानिक प्रेक्षण उपकरण के बिना भी संभव है।

(ख) अनुबंधित प्रतिवर्त्त प्रविधि–वाटसन ने अनुबंध प्रतिवर्त प्रविधि को भी महत्वपूर्ण बतलाया जिसे पैवलव तथा बेखटरेव के शोधों से लिए गए थे। उन्होंने अनुबंध को व्यवहार का विश्लेषण करने की एक वैज्ञानिक विधि के रूप में स्वीकार किया। इस विधि के दो स्पष्ट उद्देश्य थे। पहला, अनुबंधन द्वारा उन प्रक्रियाओं का अध्ययन संभव है जिसके सहारे जटिल व्यवहार निर्मित होता है तथा फिर वह छोटी-छोटी इकाइयों में बंट जाता है। दूसरा, अनुबंध द्वारा उन समस्याओं का भी अध्ययन संभव है जो काफी आत्मनिष्ठ होते हैं तथा जो अन्तर्निरीक्षण द्वारा अध्ययन किये जाने की क्षेत्र सीमा में होते हैं (जैसे, संवेदन)। परन्तु व्यवहार में अनुबंधित प्रतिवर्त प्रविधि इन उद्देश्यों को शत-प्रतिशत पूरा करने में सफल नहीं रही क्योंकि इसमें कुछ सुन्निहित आन्तरिक कार्यविधि कठिनाइयाँ हैं।

(ग) परीक्षण-कार्यविधि–वाटसन ने मनोवैज्ञानिक परीक्षण कार्य को भी एक महत्वपूर्ण विधि माना है। जब कोई व्यवहारवादी किसी मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उपयोग करते हैं तो वे उसे किसी वस्तुनिष्ठ परिस्थिति के प्रति की गयी अनुक्रियाओं या व्यवहारों के मापन के रूप में उसका उपयोग करते हैं। वाटसन ने यह भी स्पष्ट

कर दिया कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण मानसिक परीक्षण नहीं है, क्योंकि वह किसी विशिष्ट क्षमता का मापन मन के पहलू के रूप में नहीं करता है।

(घ) शाब्दिक रिपोर्ट की विधि—वाटसन ने मानव प्रयोज्यों के लिए शाब्दिक रिपोर्ट को अनुसंधान की एक प्रमुख विधि के रूप में अपनाया। इस विधि में प्रयोज्य अपने हालत या निष्पादन के बारे में एक रिपोर्ट या प्रतिवेदन देता है। व्यवहारवादी इस रिपोर्ट या प्रतिवेदन को अन्य स्पष्ट अनुक्रियाओं के तुल्य समझकर उनका अध्ययन करते हैं। व्यवहारवादियों द्वारा इसे कभी भी प्रयोज्य की मानसिक अवस्था पर किसी प्रकार की टिप्पणी नहीं समझा जाता है। जैसे, यदि कोई व्यक्ति यह कहता है, "मैं खुश हूँ" तो व्यवहारवादी इसे मानसिक अवस्था पर की गई टिप्पणी न मानकर संपूर्ण प्रतिक्रिया तंत्र का एक विशेष पहलू मानते हैं। इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि वाटसन शाब्दिक रिर्पोट या शाब्दिक प्रतिवेदन को उद्दीपन के प्रति किया गया एक पेशीय अनुक्रिया मानते हैं। संरचनावादियों द्वारा वाटसन की शाब्दिक रिपोर्ट विधि की यह कहकर आलोचना की गयी कि उन्होंने अन्तर्निरीक्षण विधि को ही नाम बदलकर अर्थात् शाब्दिक रिपोर्ट कहकर अपने संप्रदाय में सम्मिलित कर लिया है।

3. मनोविज्ञान के अभिगृहीत—वाटसन द्वारा अपने व्यवहारवाद में वर्णित मनोविज्ञान के लिए कुछ विशेष पूर्वकल्पनाएँ जिन्हें अभिगृहीत कहा जाता है, का वर्णन किया गया है। इनके मुख्य अभिगृहीत निम्नांकित हैं—

(क) ग्रन्थीय स्रावों तथा पेशी गतियों से ही व्यवहार का निर्माण होता है और इसलिए व्यवहार को दैहिक रासायनिक प्रक्रियाओं के रूप में भी मापा जा सकता है।

(ख) अनुक्रिया तत्वों के मिलने से व्यवहार का निर्माण होता है तथा इसे उचित वैज्ञानिक विधि द्वारा विश्लेषित किया जा सकता है।

(ग) प्रत्येक प्रभावी उद्दीपन एक तात्कालिक अनुक्रिया उत्पन्न करता है। इसलिए, व्यवहार का एक निश्चित कारण तथा परिणाम निर्धारिता होता है।

(घ) आँकड़ों की प्रकृति—वाटसन ने हमेशा वस्तुनिष्ठ आंकड़ों पर बल दिया। अन्तर्निरीक्षण द्वारा चेतन के अध्ययनों से प्राप्त आत्मनिष्ठ आंकड़ों को अस्वीकृत कर दिया। वैसे व्यवहार जो विशेष समय एवं स्थान में किये जाते हैं, तथा पेशीय एवं ग्रन्थीय गतियों के वस्तुनिष्ठ रिपोर्ट पर आधारित होते हैं, वे ही प्राथमिक या मुख्य आँकड़े हैं जिसे मनोवैज्ञानिकों द्वारा विश्लेषण किया जाना चाहिए। इन आंकड़ों की प्रकृति ऐसी है कि उनका परिणामात्मक ढंग से विश्लेषण किया जा सकता है तथा उससे अर्थपूर्ण सामान्यीकरण भी संभव है।

4. सम्बन्ध का नियम—वाटसन ने अपने व्यवहारवाद में बारम्बारता के नियम तथा नवीनता के नियम को सम्बन्ध के नियम के रूप में काफी मान्यता दी है। बाद में उन्होंने पैवलव द्वारा प्रयोगशाला में अध्ययन किए गए अनुबन्धन के नियम को भी महत्वपूर्ण माना। उनका मत था कि अनुबन्धन सीखने का एक महत्वपूर्ण नियम है तथा सभी तरह के सीखना को अनुबंधन के रूप में ही व्यक्त किया जा सकता है। परन्तु सम्बन्ध के नियम की सोच में उन्होंने थॉर्नडाइक के प्रभाव नियम को सम्मिलित नहीं किया। बल्कि उन्होंने इस नियम पर आपत्ति उठाते हुए कहा कि इसमें आत्मनिष्ठता सम्मिलित है जिसे एक व्यवहारवादी कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते।

5. चयन का नियम—जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है व्यवहारवाद के दो मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य है अनुक्रिया के बारे में पूर्वकथन करना। यह उद्दीपन की चयनात्मक क्रिया द्वारा संभव हो पाता है। प्राणी को एक साथ कई तरह के उद्दीपन उत्तेजित करते हैं। लेकिन उनमें से वह कुछ के प्रति अनुक्रिया करता है तथा कुछ के प्रति अनुक्रिया नहीं करता है। प्रश्न उठता है कि न उद्दीपनों का चयन किस तरह से किया जाता है जिसके प्रति व्यक्ति अनुक्रिया करता है ? वाटसन का मत था कि प्राणी ऐसे उद्दीपनों का चयन कई जन्मजात प्रवृत्तियों के आधार पर करता है। अनुक्रिया तथा उचित उद्दीपन का चयन किया जाना बहुत हद तक कुछ जन्मजात एवं

अर्जित उद्दीपन अनुक्रिया सम्बन्धों तथा अनुबन्धन के नियम द्वारा इन सम्बन्धों के तात्कालिक परिमार्जन पर निर्भर करता है।

6. मन-शरीर समस्या—वाटसन द्वारा मन-शरीर समस्या पर जो विचार व्यक्त किए गए हैं, वह व्यवहारवाद का एक प्रमाणक है। वाटसन तथा उनके अन्य सहयोगियों द्वारा मन या चेतन के अस्तित्व को स्वीकारा नहीं गया। इन लोगों का मत था कि प्राणी में सिर्फ शरीर होता है, मन नहीं। वाटसन ने यह पूर्णत: स्पष्ट किया था कि चेतन एक ऐसी वस्तु है जिसे प्राणी न तो कभी देखता है, न स्पर्श करता है, न सूंघता है और न ही स्वाद लेता है। यह एक तरह की ऐसी पूर्वकल्पना है जिसकी जाँच सम्भव नहीं है। इस तरह से मन-शरीर समस्या पर वाटसन की स्थिति एक अद्धैतवादी की थी।

स्पष्ट हुआ कि वाटसन का व्यवहारवाद औपचारिक रूप से स्थापित एक ऐसा स्कूल है जिसने मनोविज्ञान को न केवल परिभाषित ही किया बल्कि दैहिक अद्धैतवाद के दावे को मजबूत करते हुए मनोविज्ञान की विभिन्न समस्याओं पर अपना वैज्ञानिक विचार भी व्यक्त किया।

2.2 वाटसन के व्यवहारवाद की द्वितीयक विशेषताएँ

वाटसन के व्यवहारवाद की कुछ प्राथमिक या औपचारिक विशेषताओं के अलावा कुछ द्वितीयक विशेषताएँ भी हैं। व्यवहारवाद के एक सम्पूर्ण एवं संगठित ज्ञान के लिए यह आवश्यक है कि इन द्वितीयक विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला जाए। इन विशेषताओं को इसलिए भी जानना आवश्यक है कि वाटसन के व्यवहारवाद की अधिकतर आलोचनाएँ इन्हीं से संबंधित हैं। कुछ ऐसी विशेषताएँ निम्नांकित हैं–

१. भाषा विकास—वाटसन के अनुसार भाषा विकास शिशुओं की यादृच्छिक कंठ साधना या स्वरोच्चारण तथा तुतलाहट से सीखा गया व्यवहार होता है।

२. चिन्तन—वाटसन के लिए चिन्तन एक अस्पष्ट व्यवहार है, जो मांसपेशीय गतियों या ग्रन्थीय स्रावों से निर्मित होता है। ऐसी अनुक्रिया को सीधे व्यक्ति प्रेक्षण नहीं कर पाता है। फिर भी वे व्यक्ति के स्पष्ट व्यवहार पर अधिक बल डालते हैं।

३. वाटसन का पर्यावरणवाद—वाटसन के अनुसार प्रत्येक सामान्य मानव शिशु अपने आप में कुछ विशेष अन्त:शक्ति रखता है। पर्यावरण उन अन्त:शक्तियों को इस ढंग से मोड़ता है कि बच्चा बड़ा होकर एक सज्जन भी बन सकता है या फिर एक दुर्जन भी।

४. निर्धार्यता—वाटसन इस सिद्धान्त के विरोधी थे कि व्यक्ति अपने कार्यों के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेवार होता है क्योंकि उनकी अपनी स्वतंत्र इच्छा होती है। इसके विपरीत उन्होंने यह कहा कि मानव व्यवहार कुछ बाह्य कारकों द्वारा निर्धारित होता है, न कि वह स्वतन्त्र इच्छा का प्रतिफल होता है। वाटसन की इस विचारधारा का अपराधी व्यवहार के अध्ययन में विशेष रूप से स्वागत किया गया।

स्पष्ट हुआ कि वाटसन के व्यवहारवाद की कई द्वितीयक विशेषताएँ थीं जिसके कारण उनके संप्रदाय का वर्चस्व मनोविज्ञान के क्षेत्र में बना रहा।

2.3 वाटसन का प्रयोगात्मक सूत्रीकरण

वाटसन एक ऐसे मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग तथा अर्द्ध प्रयोग किये ताकि वे अपनी वस्तुनिष्ठता के दावे को अधिक स्पष्ट एवं प्रयोगात्मक बना सकें। उदाहरण के रूप में तीन ऐसे क्षेत्रों को लिया जा सकता है जिससे वाटसन ने अपना गहन प्रयोगात्मक कार्यक्रम प्रारम्भ किया–सीखना, संवेग तथा स्मृति। इन तीनों का वर्णन निम्नांकित है–

1. सीखना–वाटसन ने सीखने पर बल डाला था। उनके लिए सभी तरह की आदतें सीखने का ही प्रतिफल होती हैं और इनका निर्माण दो तरह के नियमों अर्थात् बारम्बारता तथा नवीनता के आधार पर होता है। इन दो नियमों के आधार पर सरल भूल-भुलैया सीखना तथा जटिल विषय सीखने की प्रक्रिया की भी व्याख्या की। उन्होंने थार्नडाहक के प्रभाव नियम की आलोचना की और कहा कि यह नियम काफी आत्मनिष्ठ है क्योंकि इसमें सन्तुष्टि तथा खोज जैसे शब्दों का खुलकर उपयोग किया गया था। वाटसन पैवलव द्वारा अनुबंधित प्रतिवर्त्त पर किये गये प्रयोग से काफी प्रभावित हुए। इसे आधार बनाते हुए वाटसन ने यह दावा किया कि अनुबन्धित अनुक्रियाओं के सहारे न केवल सीखना बल्कि चिन्तन एवं संवेग जैसे व्यवहार की भी सफल व्याख्या सम्भव है।

2. संवेग–वाटसन का दूसरा प्रमुख प्रयोगात्मक कार्यक्रम संवेग के क्षेत्र में था जहाँ उन्होंने 3 साल के नीचे की उम्र के बच्चों पर कई अध्ययन किये। इसमें से कुछ अध्ययन का स्वरूप प्रयोगात्मक एवं अर्द्धप्रयोगात्मक था तथा कुछ का स्वरूप अनुदैर्ध्य था। इनमें से उनका अनुदैर्ध्य अध्ययन अधिक लोकप्रिय हो सके। उन्होंने कई शिशुओं एवं बच्चों के संवेगों का प्रेक्षण लम्बे अरसे तक किये और उसके बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जन्म के समय शिशुओं में तीन स्पष्ट संवेग अर्थात् डर, रोष तथा प्यार होता है। इस आधार पर वाटसन का मत था कि संवेग जन्मजात होते हैं। उन्होंने इन तीनों संवेगों के व्यवहारात्मक लक्षण पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने कहा कि डर से बच्चे में भयानक सांस रुकने जैसी अवस्था हो जाती है, आँखें बन्द हो जाती हैं तथा होठ में सिकुड़न हो जाती है, आदि-आदि। रोष की अनुक्रिया में बच्चे अपना शरीर कड़ा कर लेते हैं तथा हाथ एवं बाँह द्वारा प्रहार करने की कोशिश करते हैं। प्यार में बच्चे हंसते हैं तथा वे गिड़गिड़ाते हैं एवं कूजन करते हैं। अर्द्ध-प्रयोगात्मक प्रेक्षणों के आधार पर उन्होंने कुछ वैसे उद्दीपनों या हालातों की भी पहचान की जिससे शिशुओं में डर, रोष एवं प्यार प्रभावित होते हैं।

3. स्मृति–वाटसन द्वारा उन सभी मनोवैज्ञानिकों के खिलाफ आवाज उठायी गयी जिन्होंने स्मृति को मन का संकाय माना था। वास्तव में, वे अपने अर्द्ध प्रयोगात्मक प्रेक्षणों के आधार पर स्मृति को एक त्रिप्रक्रिया व्याख्या प्रदान की। पहला, कुछ कौशल या आदत को सीखना आवश्यक है। दूसरा, अनुप्रयोग के कारण सीखी गयी आदतों तथा कौशलों का विस्तरण हो जाता है। अन्त में, पुनर्सीखने की अवस्था होती है जिसमें व्यक्ति उसके कार्य या पाठ को सीखने में पुनः प्रयास करता है। जब कोई व्यक्ति सीखे गये पाठ का प्रत्याह्वान करने में असमर्थ रहता है तो इसका मतलब यह हुआ कि जो पेशीय तंत्र मौलिक सीखना के दौरान निर्मित हुए थे वे टूट गए। वाटसन द्वारा प्रतिपादित यह त्रिप्रक्रिया व्याख्या पेशी स्मृति तथा शाब्दिक स्मृति दोनों पर समान रूप से लागू होती है।

ऊपर वर्णन किये गये प्रयोगात्मक कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि वाटसन एक प्रयोगकर्त्ता भी थे हालांकि यह बात तय है कि वे वुण्ट एवं टिचेनर की तरह प्रयोगकर्त्ता नहीं थे। उनका प्रयोगात्मक कार्यक्रम बाद के प्रयोगकर्मियों के लिए प्रेरणा का एक उत्तम स्रोत साबित हुआ है।

2.4 वाटसन के व्यवहारवाद की आलोचना (Criticisms of Watsonian Behaviourism)

आलोचकों ने व्यवहारवाद के प्राथमिक संप्रदाय तथा द्वितीयक संप्रदाय दोनों की आलोचना कई मुद्दों पर की है। आलोचना के प्रमुख बिन्दु निम्नांकित हैं–

1. वाटसन के मनोविज्ञान के सबसे बड़े आलोचक विलियम मैकडुगल थे। वाटसन पर तीखा प्रहार करते हुए मैकडुगल ने यह स्पष्ट किया कि चेतन तथा मन के अस्तित्व को नकार करके तथा अन्तर्निरीक्षण विधि को पूर्णतः अस्वीकृत करके वाटसन ने मनोविज्ञान के क्षेत्र को संकुचित कर दिया है तथा साथ-ही-साथ कई महत्वपूर्ण सूचनाओं को मनोविज्ञान के क्षेत्र से बाहर कर दिया है।

2. वाटसन की आलोचना इस बिन्दु पर भी की गयी है कि उन्होंने कुछ आत्मनिष्ठ संप्रत्ययों जैसे–इच्छा, अर्थ, चिन्तन आदि को व्यवहारवादी भाषा में परिणत करने की कोशिश की है। ऐसे आत्मनिष्ठ संप्रत्ययों से व्यवहारवाद की वस्तुनिष्ठता पर दिया गया बल कमजोर पड़ने लगता है।

3. वाटसन की आलोचना इस बिन्दु पर भी की गयी है कि उन्होंने विभिन्न व्यवहारों की व्याख्या में आन्तरिक व्यवहार प्रवृत्तियों का उपयोग किया है जिसका प्रेक्षण सीधे नहीं किया जा सकता है। इस तरह से आलोचकों ने वाटसन पर एक परस्पर विरोधी ढांचा प्रस्तुत करने का आरोप लगाया है जहाँ एक ओर तो वे वस्तुनिष्ठ रूप से प्रेक्षित व्यवहार के अध्ययन पर बल डालते हैं तो दूसरी ओर आन्तरिक व्यवहार प्रवृत्तियों के अध्ययन पर, जिसे प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता है।

4. कुछ मनोवैज्ञानिकों जैसे–टॉलमैन (1932) ने वाटसन के मनोविज्ञान की आलोचना करते हुए कहा है कि वाटसन ने अपने मनोविज्ञान में उद्देश्य को व्यवहार की व्याख्या से पूर्णतः हटा दिया है या इसे वैज्ञानिक व्याख्या के लिए एक अनावश्यक संप्रत्यय बतलाया है। टॉलमैन ने यह भी कहा है कि वाटसन ने व्यवहारों की व्याख्या उनके दैहिक सूचकों के रूप में एक आणविक इकाई में की है। टॉलमैन ने इस तरह की आणविक व्याख्या को अस्वीकृत कर दिया है और उसकी जगह पर ववर्ण व्याख्या प्रदान की है जिसमें उद्देश्यपूर्णता पर बल डाला गया है जिसके बिना किसी भी संप्रत्यय या व्यवहार की व्याख्या वैज्ञानिक ढंग से नहीं भी की जा सकती है।

5. अतींद्रय व्यवहारवाद के बारे में वाटसन द्वारा किये गए दावों की भी आलोचना की गयी है। हमलोग देख चुके हैं कि वाटसन ने अन्तर्निरीक्षण को अस्वीकृत किया परन्तु शाब्दिक रिपोर्ट की विधि को स्वीकृत किया। इससे एक विरोध का भाव उत्पन्न होता है और उसके लिए वाटसन की आलोचना बुरी तरह की गयी है। इससे भी बड़ा प्रहार वाटसन के अन्तःप्रिय व्यवहारवाद पर इस कारण किया गया कि वे "मन" के अस्तित्व को अस्वीकृत कर चुके थे तथा अन्तःक्रियावाद के विरोध में अपना तर्क उन्होंने उपस्थित किये थे। वाटसन के इस दावे को हंटर (1924) जैसे व्यवहारवादी तथा एंजिल (1913) वर्गमान (1956) तथा हाइडब्रेडर (1961) जैसे–अव्यवहारवादियों द्वारा समान रूप से आलोचना की गयी।

6. आलोचकों का मत है कि वाटसन ने पर्यावरणवादी दावे को जरूरत से ज्यादा उछाला है। उन्होंने आनुवंशिक तथा मूल प्रवृत्तिक कारकों की पूर्णतः उपेक्षा की है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि व्यक्ति के व्यवहारों में जो अन्तर दीखता है, उसका मुख्य कारण पर्यावरणी कारक होता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने वाटसन के इस दावे को एकतरफा बतलाने के साथ-ही-साथ खोखला भी कहा है।

इन सभी आलोचनाओं के बावजूद यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि वाटसन ने मनोविज्ञान की जड़ को वस्तुनिष्ठता के धागे से इतना मजबूत कर दिया था कि बाद के मनोवैज्ञानिकों को इसके स्वरूप को प्रयोगात्मक एवं वैज्ञानिक बनाना काफी आसान हो गया।

2.5 उत्तरकालीन व्यवहारवाद (Later behaviourism)

वाटसन के बाद एक मनोवैज्ञानिक समूह ने अपने को वाटसनोनियन व्यवहारवाद के ढाँचे के अन्तर्गत रखकर अपने-अपने सिद्धान्त विकसित किए जिसका नाम उत्तरकालीन व्यवहारवाद या नवव्यवहारवाद दिया गया। उत्तरकालीन व्यवहारवादी में गथरी, हल, स्कीनर, टॉलमैन, कैन्टोर तथा बन्डुरा को महत्वूपर्ण माना गया है।

2.5.1 मनोविज्ञान में इडविन आर० गथरी (1886-1959) का योगदान

गथरी के योगदानों को निम्नलिखिति शीर्षकों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है–

1. समीपता द्वारा सीखना—वाटसन की तरह गथरी भी इस विचार से सहमत थे कि मनोविज्ञान में सिर्फ उन्हीं व्यवहारों का अध्ययन करना चाहिए जो प्रक्षेणीय तथा मापनीय हैं। वे सामीप्य अनुबंधन के सिद्धान्त के प्रबल समर्थक थे। सीखने की व्याख्या करने में गथरी ने थॉर्नडाइक का अनुसरण अवश्य किया परन्तु उन्होंने उनके प्रभाव नियम को अस्वीकृत कर दिया। उनका मत था कि सीखने में अभ्यास के महत्व को नजर अन्दाज किया गया। उनका यह विचार उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धांतवादियों के प्रतिकूल था क्योंकि इन लोगों द्वारा सीखने के लिए अभ्यास को महत्वपूर्ण माना गया था। गथरी के इस दावे से कि सीखना एक प्रयास में ही हो जाता है एक तरह का विरोधाभास उत्पन्न करता है। इस स्पष्ट विरोधाभास को दूर करने के लिए गथरी ने गति तथा कार्य के बीच अन्तर किया है। गथरी ने यह स्पष्ट किया कि गति का सीखना एक प्रयास में संभव हो पाता है। परन्तु किसी कार्य को सीखना एक प्रयास में संभव नहीं हो पाता है। इसके लिए अभ्यास की जरूरत पड़ती है।

2. अभिप्रेरण, पुरस्कार तथा दंड—गथरी ने अभिप्रेरण के महत्व को भी नजरअंदाज किया है। उनके अनुसार अभिप्रेरण का महत्व मात्र इतना ही होता है कि इससे गति के बल तथा संख्या में वृद्धि हो जाती है जिससे उद्दीपनों के साथ साहचर्यात्मक सम्बन्ध मजबूत होने की सम्भावना अधिक होती है।

3. विलोपन तथा विस्मरण—गथरी ने विलोपन तथा विस्मरण के क्षेत्र में भी सक्रिय योगदान किया है। पैवलव जो मूलत: एक व्यवहारवादी ही थे, के अनुसार विलोपन तथा विस्मरण का मौलिक कारण पुनर्बलन या स्वाभाविक उद्दीपन को सीखने की परिस्थिति से हटा देना है। गथरी ने इन दोनों घटनाओं की व्याख्या दूसरे ढंग से की है। उनके अनुसार जब प्राणी कोई उद्दीपन अनुक्रिया सम्बन्ध स्थापित करता है, तो यह प्राणी के याददाश्त में तब तक रहता है जब तक कि कोई नयी उद्दीपन अनुक्रिया सम्बन्ध उत्पन्न होकर उसे प्रतिस्थापित नहीं कर देती है या उसे समाप्त नहीं कर देती है। विलोपन की व्याख्या करने के लिए उन्होंने साहचर्यात्मक अवरोध के संप्रत्यय का प्रतिपादन किया।

4. आदतों को छोड़ना—गथरी के लिए आदत गतियों का एक स्थापित सेट होता है जो बहुत सारे उद्दीपनों के साथ साहचर्यित होता है। सामान्य रूप से उन्होंने एक नियम का प्रतिपादन किया है जिसके अनुसार उद्दीपनों की संख्या जिनसे अनुक्रिया उत्पन्न होती है, जितनी ही अधिक होती है, आदत उतनी ही मजबूत होती है।

(क) दहेली विधि—इस विधि में उद्दीपन इतना कमजोर करके उपस्थित किया जाता है कि उससे अवांछनीय अनुक्रिया नहीं होती है।

(ख) थकान विधि—इस विधि में अवांछित अनुक्रिया को जिसका त्याग किया जाना है, व्यक्ति बार-बार तबतक दोहराते जाता है जब तक कि उसमें थकान उत्पन्न न हो जाए। थकान उत्पन्न हो जाने के बाद वह स्वयं ही उस अनुक्रिया को करने की अनिच्छा व्यक्त करता है।

(ग) असंगत उद्दीपन की विधि—उद्दीपन जो अवांछित अनुक्रिया उत्पन्न करता है, को कुछ वैसे उद्दीपनों के साथ उपस्थित किया जाता है, जिससे निम्न लेकिन असंगत अनुक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं। धीरे-धीरे मौलिक उद्दीपन नयी अनुक्रिया से सम्बन्धित हो जाता है तथा पुरानी अवांछनीय अनुक्रिया का विलोपन हो जाता है।

5. पूर्वकथन एवं नियन्त्रण—वाटसन के समान गथरी नेभी यह स्पष्ट किया कि मनोविज्ञान का उद्देश्य व्यवहार के बारे में पूर्वकथन तथा नियंत्रण करना होता है। किसी भी वैज्ञानिक शोध का उद्देश्य वैज्ञानिक नियमों की खोज करना है। इन नियमों की वैधता की जाँच उनके द्वारा प्रभावी पूर्वकथन करने की क्षमता से होती है। इस वैज्ञानिक नियम का सम्बन्ध सिर्फ उन घटनाओं से होता है जो प्रेक्षणीय होते हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा गथरी के योगदानों पर टिप्पणी की गयी है तथा उनकी आलोचना भी की गई है। प्रमुख आलोचना निम्नांकित हैं—

(क) कुछ मनोवैज्ञानिकों जैसे–थॉर्नडाइक, स्कीनर, हल आदि ने सम्मिलित स्वर में यह कहा कि गथरी ने मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण समस्या जैसे–सीखने में पुरस्कार या पुनर्बलन की भूमिका को नजर अन्दाज करने की कोशिश की है। इन लोगों द्वारा यह आश्चर्य व्यक्त किया गया है कि पुनर्बलन के महत्व को नजरअन्दाज करके सीखने के सिद्धान्त की इमारत तैयार करना गथरी के लिए एक बहुत बड़ी भूल थी।

(ख) कुछ प्रयोगात्मक अध्ययन जिसे गथरी ने किया है, से यह स्पष्ट हुआ कि पशु सीखने की परिस्थिति में पुनरावृत्ति तथा रूढ़िबद्ध अनुक्रिया करते हैं। आलोचकों का मत है कि ऐसी अनुक्रिया पर बल डालकर गथरी ने वैयक्तिक अन्तर की भूमिका की उपेक्षा की है। इन आलोचकों का मत है कि गत अनुभूतियों एवं अन्य कई अनुबन्धनों के चलते प्राणी सीखने की परिस्थिति में हमेशा समान ढंग से व्यवहार नहीं करता है।

(ग) कुछ आलोचकों का मत है कि गथरी ने कम-से-कम नियमनों एवं तथ्यों के आधार पर जरूरत से ज्यादा तथ्यों की व्याख्या करने की कोशिश की है। म्यूलर तथा स्कोएनफिल्ड (1954) ने यह कहा है कि गथरी के विचार मनोविज्ञान के कई पहलुओं पर अस्पष्ट हैं। इन लोगों का मत है कि गथरी ने इन समस्याओं पर विचार किया परन्तु उनका कोई स्पष्टीकरण नहीं किया।

(घ) कुछ आलोचकों का मत है कि गथरी ने अपने विचार के पक्ष में कोई स्पष्ट प्रयोगात्मक सबूत नहीं प्रदान किए हैं। जब हम गथरी के सिद्धान्त की तुलना स्कीनर, हल तथा थॉर्नडाइक के सिद्धान्तों से करते हैं तो पाते हैं कि गथरी के सिद्धान्त में प्रयोगात्मक सबूतों की कमी है। सचमुच में गथरी जीवन की झांकियों या घटनाओं पर अधिक विश्वास करते थे। यद्यपि उनके द्वारा इकट्ठे की गयी झांकियाँ या घटनाएँ मनोरंजक थी, फिर भी उन्हें प्रयोगात्मक तथ्यों का प्रतिस्थापित रूप नहीं माना जा सकता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद गथरी के योगदानों को मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से श्रेष्ठ माना गया है तथा साथ-ही-साथ मूल्यवान भी।

2.5.2 हल का प्रमुख योगदान (Contributions of Hull) :

आधुनिक मनोविज्ञानिक सिद्धान्त में हल का स्थान काफी महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त में गणित तथा तर्कशास्त्र की भाषा का प्रयोग कर एक ऐसे अनोखेपन का परिचय दिया है जो मनोविज्ञान के इतिहास में अपूर्व है।

अपने सिद्धान्त के प्रतिपादन में हल ने प्राक्कल्पित निगमनात्मक विधि का ही सबसे अधिक प्रयोग किया है। उन्होंने अभिगृहीतों एवं उपप्रमेयों से प्रेक्षीय घटनाओं के द्वितीयक नियमों का क्रमबद्ध निगमन के रूप में अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन किया हैं।

1. अभिगृहीत 1 और 2 का सम्बन्ध संवेदी उत्तेजनाओं के फलस्वरूप मस्तिष्क में उत्पन्न स्नायविक क्रियाओं से था। इन अभिगृहीतों के मुताबिक जब कई संवेदी आवेग एक साथ उत्पन्न होकर आपस में अन्तःक्रिया करते हैं, तो स्नायुविक उत्तेजनों में क्रमिक ह्रास होता है।

2. तीसरे अभिगृहीत का सम्बन्ध सीखने में पुनर्बलन की भूमिका से सम्बन्धित है। गथरी तथा हल दोनों ही ने सीखने में सामीप्य उद्दीपन अनुक्रिया सम्बन्धों के महत्व को स्वीकार किया है। गथरी के लिए इस तरह का सम्बन्ध इसलिए स्थापित होता है क्योंकि इन दोनों में अर्थात् उद्दीपन तथा अनुक्रिया के होने में एक सामीप्य होता है तथा हल के लिए इन दोनों में सम्बन्ध इसलिए स्थापित होता है क्योंकि प्राणी को अनुक्रिया करने के बाद पुनर्बलन मिलता है।

3. चौथा अभीगृहीत सीखने के लिए अतिआवश्यक एवं महत्वपूर्ण अभिगृहीत है तथा इसका सम्बन्ध आदत निर्माण से है जिसे हल ने आदत शक्ति कहा है। इसका संकेत है। यह एक तरह का मध्यवर्त्ती चर है।